शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आईएसएसएन 2321–9645

कल, आज और कल भी उपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 13, अंक 10, जुलाई 2020

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

उत्तम तीन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य के विजयी प्रतिभागी

भारतीय भाषाएं: दशा, दिशा और भविष्य

मूल्य : 15 रुपये

1962 के बाद के चीन भारत के इतिहास को याद रखना चाहिए

तृतीय काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एच रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbl,u 0553875

विषय : पर्यावरण एवं प्रकृति

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०ः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः19, अंकः 10
जुलाई : 2020

भारतीय भाषाएं: दशा, दिशा और भविष्य...........

..........- 9

पश्चिम से पुनः पूर्व की ओर...

.... 7

इस अंक में......

LFkk;h LrEHk

अपनी बातः 1962 के बाद के चीन भारत के इतिहास को याद रखना चाहिए... 04

समाजः नौकर नहीं, अध्यापक बनें 13

व्यक्तित्वः डॉ० अमरनाथ 14

अध्यात्मः मैं कौन हूं... 26

`कविताए/गीत/ग़ज़लः श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, श्रीमती शबनम शर्मा, डॉ० हितेष कुमार शर्मा, डॉ० संतोष गौड़ 18–19

कहानीः ईमानदार सूअर और धोखेबाज कुत्ता डॉ० अनीता पंडा, मैं गुनहगार हूं-हितेश कुमार शर्मा,

साहित्य समाचार, ...16,29

लघु कथाएंः श्री सीताराम गुप्ता, श्रीमती शैल चंद्रा 23, 25

स्वास्थ्यः नेत्रहीनों के लिए अदभूत वरदान 27, 28

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
lj{kd lnL;
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
foKkiu iczU/kd
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;jks
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dk0% 09335155949
b&esy%vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in voSrfud gS
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV%पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

1962 के बाद के चीन भारत के इतिहास को याद रखना चाहिए

■ 1962 की लड़ाई चीन द्वारा विश्वासघात था. 1962 के बाद चीन भारत से 3 बार और युद्ध लड़ चुका है.

■ 1967 में हमारे जांबाज सैनिकों ने चीन को जो सबक सीखाया था, उसे वह कभी भुला नहीं पाएगा.

चीन द्वारा लगातार भारत पर 1962 के युद्ध के द्वारा दबाव बनाने की कोशिश एवं 1962 के जैसे परिणाम भुगतने की चेतावनी दी जाती है. 1962 की हार एक तरह का धोखाा था. भारत पंचशील के स्वर्णिम स्वप्न में खोकर जब हिंदी-चीनी भाई-भाई के नारे में खोया हुआ था, तभी 1962 की लड़ाई चीन द्वारा विश्वासघात के रूप में भारत को प्राप्त हुई. परंतु चीन को 1962 के आगे के इतिहास को भी याद रखना चाहिए.

1962 को स्मरण कराने वाले चीन को 1967 भी याद रखना चाहिए. 1967 में हमारे जांबाज सैनिकों ने चीन को जो सबक सीखाया था, उसे वह कभी भुला नहीं पाएगा. यह सब भी उन महत्वपूर्ण कारणों में से एक है जो चीन को भारत के खिलाफ किसी दुस्साहस से रोकता है. 1967 को ऐसे साल के तौर पर याद किया जाता रहेगा जब हमारे सैनिकों ने चीनी दुस्साहस का मुंहतोड़ जवाब देते हुए सैकड़ों चीनी सैनिकों को न सिर्फ मार गिराया, बल्कि भारी संख्या में उनके बंकरों को ध्वस्त कर दिया था. रणनीतिक स्थिति वाले नाथू ला दर्रे में हुई उस भीडंत की कहानी हमारे सैनिकों की जांबाजी की मिसाल है.

चीन को १९६२ ही नहीं इसके आगे के इतिहास को भी याद कर लेना चाहिए

1967 के टकराव के दौरान भारत की 2 ग्रेनेडियर्स बटालियन के जिम्मे नाथू ला की सुरक्षा जिम्मेदारी थी. नाथु ला दर्रे पर सैन्य गश्त के दौरान दोनों देशों के सैनिकों के बीच अक्सर धक्का मुक्की होते रहती थी. 11 सितंबर 1967 को धक्कामुक्की की एक घटना का संज्ञान लेते हुए नाथू ला से सेबु ला के बीच में तार बिछाने का फैसला लिया. जब बाड़बंदी का कार्य शुरु हुआ तो चीनी सैनिकों ने विरोध किया. इसके बाद चीनी सैनिक तुरंत अपने बंकर में लौट आए. कुछ देर बाद चीनियों ने मेडियम मशीन गनों से गोलियां बरसानी शुरु कर दीं. पहले 10 मिनट में 70 भारतीय सैनिक मारे गए. लेकिन इसके बाद भारत की ओर से जो जवाबी हमला हुआ, उसमें चीन का इरादा चकनाचूर हो गया. सेबू ला एवं कैमल्स बैक से अपनी मजबूत रणनीतिक स्थिति का लाभ उठाते हुए भारत ने जमकर आर्टिलरी पावर का प्रदर्शन किया. कई चीनी बंकर ध्वस्त हो गए और खुद चीनी आकलन के अनुसार भारतीय सेना के हाथों उनके 400 से ज्यादा जवान मारे गए. भारत की ओर से लगातार तीन दिनों तक दिन

रात फायरिंग जारी रही. भारत चीन को कठोर सबक दे चुका था. चीन की मशीनगन यूनिट को पूरी तरह तबाह कर दिया गया था. 15 सितंबर को वरिष्ठ भारतीय सैन्य अधिकारियों के मौजूदगी में शवों की अदला बदली हुई.

1 अक्टूबर 1967 को चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने चाओ ला इलाके में फिर से भारत के सब्र की परीक्षा लेने का दुस्साहस किया, पर वहां मुस्तैद 7/11 गोरखा राइफल्स एवं 10 जैक राइफल्स नामक भारतीय बटालियनों ने इस दुस्साहस को नाकाम कर चीन को फिर से सबक सिखाया. इस बार चीन ने सितंबर के संघर्ष विराम को तोड़ते हुए हमला किया था. दरअसल, सर्दी शुरु होते ही भारतीय फौज करीब 13 हजार फुट ऊंचे चो ला पास पर बननी अपनी चौकियों को खाली कर देती थी. गर्मियों में जाकर सेना दोबारा तैनात हो जाती थी. चीन ने 1 अक्टूबर का हमला यह सोचकर किया था कि चौकियां खाली होंगी, लेकिन चीन की मंशा को देखते हुए हमारी सेना ने सर्दी में भी उन चौकियों को खाली नहीं किया था. इसके बाद आमने सामने की सीधी लड़ाई शुरु हो गई.

हमारी सेना ने भी इस बार चीन को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए गोले दागने शुरू कर दिए. इस लड़ाई का नेतृत्व करने वाले थे 17 वीं माउंटेन डिवीजन के मेजर जनरल सागत सिंह. लड़ाई के दौरान ही नाथू ला और चो ला दर्रे की सीमा पर बाड़ लगाने का काम किया गया ताकि चीन फिर इस इलाके में घुसपैठ की हिमाकत नहीं कर सके.

इस तरह 1967 की इस लड़ाई में भारतीय सेना ने चीनी हमलों को नाकाम कर दिया. लड़ाई के बाद घायल कर्नल राय सिंह को महावीर चक्र, शहादत के बाद कैप्टन डागर को वीर चक्र और मेजर हरभजन सिंह को महावीर चक्र से सम्मानित किया गया. बताया जाता है कि लड़ाई के दौरान जब भारतीय सेना के जवानों की गोलियां खत्म हो गईं तो बहादुर अफसरों एवं जवानों ने अपनी खुखरी से कई चीनी अफसरों एवं जवानों को मौत के घाट उतार दिया था.

1967 के ये दोनों सबक चीन को आज तक सीमा पर गोली बरसाने से रोकते हैं. तब से आज तक सीमा पर एक भी गोली नहीं चली है, भले ही दोनों देशों की फौज एक दूसरे की आंखों में आंख डालकर सीमा का गश्त लगाने में लगी रहती है. क्या ऐसे सबक के बाद भी चीन भारत के साथ दुस्साहस करेगा? चीन को याद रखना चाहिए कि आज परमाणु शक्ति संपन्न भारत से चीन की लड़ाई मुश्किल ही है.

1967 के 20 वर्ष बाद भारत से चीन को फिर से गहरा झटका लगा, जिसकी बुनियाद 1986 में चीन की ओर से रखा जाने लगा. इस बार फिर टकराव पर चीन ने भारत को कहा कि भारत को इतिहास का सबक नहीं भूलना चाहिए, पर लगता है कि चीन भी कुछ भूल गया है. 1986–87 में भारतीय सेना ने शक्ति प्रदर्शन में पीएलए को बुरी तरह से हिला दिया था. इस संघर्ष की शुरुआत तवांग के उत्तर में समदोरांग चू रीजन में 1986 में हुई थी. जिसके बाद उस समय के सेना प्रमुख जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी के नेतृत्व में आपरेशन फाल्कन हुआ था.

1987 की झड़प की शुरुआत नामका चू से हुई थी. भारतीय फौज नामका चू के दक्षिण में ठहरी थीं, लेकिन एक आईबी टीम समदोरांग चू में पहुंच गई, ये जगह नयामजंग चू के दूसरे किनारे पर है. समदोरंग चू और नामका चू दोनों नाले इस उत्तर से दक्षिण को बहने वाली नयामजंग चू नदी में गिरते हैं. 1985 में भारतीय फौज पूरी गर्मी में यहां डटी रही, लेकिन 1986 की गर्मियों में पहुंची तो यहां चीनी फौजें मौजूद थीं. समदोरांग

चू के भारतीय इलाके में चीन अपने तंबू गाड़ चुका था, भारत ने पूरी कोशिश की कि चीन को अपने सीमा में लौट जाने के लिए समझाया जा सके, लेकिन अड़ियल चीन मानने को तैयार नहीं था.

चीन ने पूर्व में लड़ाई की तैयारी पूरी कर ली थी. इधर भारतीय पक्ष ने भी फैसला ले लिया तथा इलाके फौज को एकत्रित किया जाने लगा. इसी के लिए भारतीय सेना ने आपरेशन फाल्कन तैयार किया, जिसका उद्देश्य सेना को तेजी से सरहद पर पहुंचाना था. तवांग से आगे कोई सड़क नहीं थी, इसलिए जनरल सुंदर जी ने जेमीथांग नाम की जगह पर एक ब्रिगेड को एयरलैंड करने के लिए इंडियन एयरफोर्स को रूस से मिले हैवी लिफ्ट एमआई-26 हेलीकाप्टर का इस्तेमाल करने का फैसला किया.

भारतीय सेना ने हाथुंग ला पहाड़ी पर पोजीशन संभाली, जहां से समदोई चू के साथ ही तीन और पहाड़ी इलाकों पर नजर रखी जा सकती थी. 1962 में चीन ने ऊंची जगह पर पोजीशन लिया था, परंतु इस बार भारत की बारी थी. जनरल सुंदर जी की रणनीति यही पर खत्म नहीं हुई थी. आपरेशन फाल्कन के द्वारा लद्दाख के डेमचाक और उत्तरी सिक्किम में टी-72 टैंक भी उतारे गए. अचंभित चीनियों को विश्वास नहीं हो रहा था. इस आपरेशन में भारत ने एक जानकारी के अनुसार 7 लाख सैनिकों की तैनाती की थी. फलतः लद्दाख से लेकर सिक्किम तक चीनियों ने घुटने टेक दिए. इस आपरेशन फाल्कन ने चीन को उसकी औकात दिखा दी. भारत ने शीघ्र ही इस मौके का लाभ उठाकर अरुणाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दे दिया.

अतीत के पन्नों में व्यस्त रहने वाले ग्लोबल टाइम्स को 1967 एवं 1986 के उपरोक्त घुटने टेकने वाले घटनाओं को भी याद रखना चाहिए. चीन वियतनाम युद्ध के बाद चीनी सेनाओं ने कोई भी लड़ाई नहीं लड़ी है, जबकि भारतीय सेना सदैव पाकिस्तानी सीमा पर अघोषित युद्ध से संघर्षरत ही रहती है. तुलनात्मक तौर पर भारत चीन के समक्ष भले ही कमजोर लगे, परंतु वास्तविक स्थिति ऐसी नहीं है. 1967 के दोनों युद्धों से स्पष्ट है कि अपनी अचूक रणनीति के द्वारा भारत न्यूनतम संसाधनों के बीच भी चीन को हराने में सक्षम है.

डोकलाम क्षेत्र में भारत की भौगोलिक स्थिति हो या हथियार दोनों ही चीन से बेहतर हैं. भारतीय सुखोई हो या ब्रह्मोस, इसका चीन के पास कोई काट नहीं है. चीनी सुखोई 30 एमकेएम एक साथ केवल 2 निशाने साध सकता है, जबकि भारतीय सुखोई एक साथ 30 निशाने साध सकता है. भारत उत्तरी भारत से मिसाइल से चीन पर हमला करने में सक्षम है.

भारत-चीन व्यापार संतुलन भी चीन की ओर ही झुका हुआ है. ऐसे में संबंधों में और कटुता की वृद्धि होने से चीन को इस व्यापार से भी हाथ धोना पड़ेगा. चीन भारत के साथ व्यापार को कितना महत्व देता है, उसे नाथू ला के नवीनतम घटना से भी समझा जा सकता है. डोकलाम मुद्दे पर भारत पर दबाव डालने के लिए चीन ने नाथू ला दर्रे से मानसरोवर यात्रा रोकी, लेकिन व्यापार बिल्कुल नहीं. इस तरह अतीत की व्याख्या, सामरिक व्याख्या एवं आर्थिक व्याख्याओं से स्पष्ट है कि डोकलाम से चीन ही पीछे हटेगा.

संपादक

पश्चिम से पुनः पूर्व की ओर

-प्रो. शकुन्तला बहादुर,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

स्वर्ग में सभा जुटी थी. महर्षि पतंजलि उदास बैठे थे. योगिराज श्रीकृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भी सभा में थे. तभी नारद मुनि आ पहुँचे. सबने अभिवादन किया. मुनि बोले, महर्षि पतंजलि! आप इतने उदास क्यों हैं? ऋषि ने कहा-'क्या बताऊँ तुमको? मैंने अपना योगदर्शन का ग्रन्थ देववाणी संस्कृत और देवनागरी लिपि में लिखा था. विदेशियों ने परिश्रम से उसे अपनाकर अपनी भाषा में कर लिया. आज सारे जग में योग को अंग्रेजी के माध्यम से परोसा जा रहा है. जैसे वह उनकी अपनी सौगात हो, जिसे बड़ी उदारता से सबको बाँटा जा रहा हो.सच तो ये है कि विदेशियों से उपभोग के बाद बचे यानी कि उच्छिष्ट के रूप में वह ज्ञान मेरे भारतीयों के पास पहुँच रहा है. आज 'योग' के शिक्षक बिना मेरा योग दर्शन पढ़े ही इंग्लिश बोलने वाले शिक्षकों से सीखकर इंग्लिश में ही योग सिखा रहे है, जिसमें कभी कभी कुछ अशुद्धियाँ भी रह जाती हैं.'

नारद मुनि बोले- ऐसा क्या सुन लिया आपने? पतंजलि बोले- एक आसन है, जिसे अंग्रेजी में 'रैबिट पोज' यानी कि खरगोश की स्थिति का आसन. मैंने कई शिक्षकों को 'रैबिट पोज' के बाद 'शशांक आसन' कहते सुना है. शशांक का अर्थ है चन्द्रमा. ये चन्द्रमा का आसन तो है नहीं. वस्तुतः संस्कृत में ख़रगोश के लिये दो शब्द हैं- शश और शशक. चन्द्रमा में दिखने वाले चिह्न को जनश्रुति में चन्द्रमा की छवि मानकर-जिसके अंक यानी गोद में शश यानी ख़रगोश बैठा है- इस कल्पना से चन्द्रमा को शशांक कहते हैं. तो ये आसन सभी योग ग्रन्थों में 'शशक आसन" या 'शशकासन' कहा जाता है. कोई कोई शशंक या सशंक आसन भी कहते हैं. ये भी अशुद्ध है. और क्या कहूँ? आज सारे विश्व में योग का बोल बाला है, जिसे सब 'योगा' कहते हैं. संस्कृत की युज् धातु से बना है योग शब्द. जिसका अर्थ है जोड़ना. अष्टांग योग द्वारा चित्तवृत्तियों को नियंत्रित करके आत्मा को परमात्मा से जोड़ना हैं. उसे लोग मन माने ढंग से योगा कहते हैं. यदि कोई योग कहे तो उसे अशुद्ध समझा जाता है. ग् को हलन्त की तरह भी नहीं बोले, ह्रस्व अ जैसा समय दें, दीर्घ आ जैसा नही. अच्छा हो कि योगा न कहकर 'योगासन' कहें. अब तो थोड़ी सी कसरत करने वाला भी गर्व से कहता है- मैं योगा करता हूँ. लोगों ने विविध नामों से थोड़े से हेर फेर के साथ अलग अलग योग बना लिये हैं.

प्रायः योग-शिक्षक इंग्लिश में ही बोलते और सिखाते हैं. क्या किसी भारतीय भाषा में योग नहीं सिखाया जा सकता, जिसे अधिक लोग समझते हों. हाँ, किसी को कोई कठिनाई हो तो वह अलग से पूछ सकता है. स्वामी रामदेव का कार्यक्रम तो दूरदर्शन पर सभी देखते, सुनते और समझते हैं. साथ में करते भी है. वहीं से योग का प्रचार और प्रसार दूर दूर तक हुआ है.

योगा, रोगा, भोगा आदि सब अशुद्ध है. उच्च्व शिक्षा प्राप्त भी रोमन लिपि में अंतिम ए वर्ण के कारण इसे योगा ही कहते हैं. मुझे दुःख होता है.

योगा, रोगा, भोगा आदि सब अशुद्ध है. उच्च्व शिक्षा प्राप्त भी रोमन लिपि में अंतिम ए वर्ण के कारण इसे योगा ही कहते हैं. मुझे दुःख होता है. तभी श्री राम और श्री कृष्ण भी उठकर सामने आए. कहने लगे-हमें भी तो पृथ्वी के लोगों ने रामा, कृष्णा बना दिया है. बड़े प्रेम और भक्ति से गाते हैं- 'हरे रामा, हरे कृष्णा.' हमारे पुल्लिंग नामों को स्त्रीवाचक नाम बना दिया है. योगिराज कृष्ण बोले- 'जब कृष्ण को कृष्णा कहते हैं तो फिर कृष्णा यानी कि द्रौपदी को क्या कहेंगे? मैं सोचता हूँ कि मुझे बुला रहे हैं या द्रौपदी को?' रोमन के प्रभाव से देवनागरी के शुद्ध शब्द अशुद्ध रूप में प्रचलित हो गये हैं. वैसे ये भाषा का दोष नहीं है, बोलने वालों का दोष है. मेरा मत है कि जितनी भी देशी या विदेशी भाषाएँ हम सीखें, उतना अच्छा है. भारतीय इंग्लिश धाराप्रवाह बोलते हैं. विदेश में उनको उच्च्व पदों पर आसीन देखकर गर्व भी होता है. किन्तु जहाँ उसकी आवश्यकता हो, विदेशियों के साथ और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में ज्ञानार्जन हेतु विदेशी भाषा उपयोगी सिद्ध होती हो, उसका प्रयोग अवश्य करें, किन्तु उसके सामने अपनी भारतीय भाषा या मातृभाषा को हेय या दीन हीन मानना, उसका अपमान या तिरस्कार करना ही होगा. जो सर्वथा अनुचित है.

सन् 1963 की बात है. मैं जर्मनी में हिन्दी पढ़ा रही थी. कई देशों के छात्र कक्षा में थे. एक छात्र ने इंग्लिश में पूछा-'क्या भारत की अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है?' मैंने कहा- हिन्दी है. उसने कहा-मैंने आज तक किसी भारतीय को हिन्दी बोलते नहीं सुना. मैंने कहा-जब विदेशी साथ में होते हैं, तो उनके समझने के लिये भारतीय इंग्लिश में बोलते हैं. उसने पुनः प्रतिवाद किया-'नो मैडम, अकेले इंडियन ग्रूप में भी मैंने उनको इंग्लिश में ही बात करते देखा है.' तब मैंने उसे समझाया कि भारत में अनेक भाषाएँ हैं. ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजी को अनिवार्य कर दिया गया था, अतः पूरे भारत में लोगों को आपस में समझने, बात करने में अधिक सुविधा जनक हो गयी, लोग इसके अभ्यस्त हो गये. उस दिन मेरी अस्मिता को बहुत ठेस लगी थी.

एक छात्र ने इंग्लिश में पूछा-'क्या भारत की अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है?' मैंने कहा-हिन्दी है. उसने कहा-मैंने आज तक किसी भारतीय को हिन्दी बोलते नहीं सुना.

किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के लिये राष्ट्र-ध्वज के साथ ही राष्ट्र-गान और राष्ट्र-भाषा भी अत्यन्त आवश्यक होती है. वह भाषा जिसे देश के बहुसंख्यक लोग समझ और बोल सकें, वही राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँध कर संगठित कर सकती है. स्वतन्त्रता-संग्राम के समय विभिन्न प्रान्तीय भाषाएँ बोलने वाले हिन्दी के माध्यम से एकजुट हो गये थे. भाषा ने ही संगठित किया था. अंग्रेजों ने अंग्रेजी को पूरे देश में अनिवार्य करके सबको एक सूत्र में बाँध दिया था. उन्होंने हमारी भाषा सीखकर और अपनी सिखा कर, हमारे ग्रन्थों का अनुवाद करके उनको ही हमारी शिक्षा के पाठ्यक्रम में लगा दिया. मुझे याद है-मैंने एम.ए. संस्कृत में जो पुस्तकें पढ़ी थीं, वे थीं- पीटरसन सेलेक्शन आफ ऋग्वेद और ऐतरेय ब्राह्मण पर हह्ग की कमेंट्री वाला ग्रन्थ. लगता था जैसे ऋग्वेद और ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ अंग्रेजों के मस्तिष्क की उपज हों, उनकी रचना हों. जब कि 1947 में भारत स्वतन्त्र हो गया था.हमारे प्रोफेसर्स भी सभी विदेशी विद्वानों के मत उद्धृत करके हमें पढ़ाते थे. बर्लिन की लाइब्रेरी में और इंडिया आफिस लाइब्रेरी, लंदन में हमारे अनेक ग्रन्थों की मूल प्रतियाँ सँजो कर रक्खी गयी हैं, जिनकों मैंने वहाँ स्वयं देखा था.

भाषा संस्कृति की संवाहक है और संस्कृति देश की अस्मिता की परिचायक है. अतः हम भारतीयों को उन पर अभिमान होना चाहिये. हमारी भाषा वैज्ञानिक तो है ही साथ में विश्व की प्राचीनतम भाषा है और प्राचीनतम संस्कृति भी है.' विश्व जब सोया पड़ा था, जागता था देश अपना. विदेशियों ने हमारे उस प्राचीनतम ज्ञान को अपनाने में अपना पूरा जीवन लगा दिया और आज वही उनके पास से हम तक लौट कर आ रहा है. जो भी हो, अपना परिवार, अपना देश, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति हमारे आत्माभिमान को, स्वाभिमान और आत्मगौरव को जगाने वाले होते हैं. विदेश में अपनी भाषा बोलने वाले से मिलना कितना सुखद होता है और वैसे ही अपने देश के व्यंजन परोसने वाला भी मन को अधिक भाता है. अपनी वेश भूषा से हम विदेश में पहचाने जाते हैं. जर्मनी में उषा पटेल ने मुझसे कहा कि आपको बहुत निमन्त्रण मिलते हैं, मुझे तो कोई नहीं बुलाता है. मैंने कहा कि मुझे भारतीय वेश-साड़ी में देखकर सब पहचान जाते हैं कि मैं भारत से हूँ.तुमको जीन्स और टाप मे लोग मैक्सिको या अन्य कहीं का समझ लेते होंगे.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान, स्व.किशोरी लाल सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान

गद्य के क्षेत्र में: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान, उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, हिन्दी सेवी सम्मान

समाज सेवा के क्षेत्र में: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-

अन्यः कलाश्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान,

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथिः ३० दिसम्बर २०२०

अध्यक्ष, श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, प्रयागराज-211011, उ. प्र., मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

भारतीय भाषाएंः दशा, दिशा और भविष्य

हिन्दी का भविष्य देखना है तो बच्चों की ओर देखना चाहिए। बच्चों की जो पीढ़ियां अधिकाधिक अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर बड़ी होंगी वे क्या भाषाई अखबारों, साहित्य, पुस्तकों, टीवी समाचारों की पाठक-दर्शक होंगी? हिंदी के कितने लेखकों, पत्रकारों, राजभाषा अधिकारियों के बच्चे हिंदी माध्यम में पढ़ते हैं? इसलिए आज यह जो विस्तार दिख रहा है अगले 20–25 साल का खेल है। उसके बाद ऊपर से नीचे तक अंग्रेजी का ही वर्चस्व हर क्षेत्र में दिखेगा।

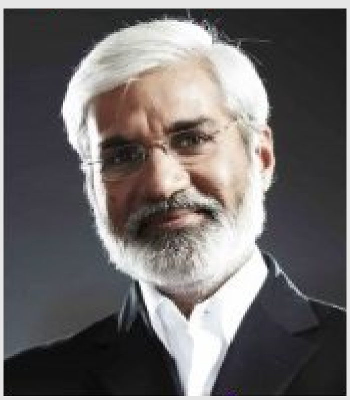

-राहुल देव

सारी भारतीय भाषाएं अपने जीवन के सबसे गंभीर संकट के मुहाने पर खड़ी हैं। यह संकट अस्तित्व का है, महत्व का है, भविष्य का है. कुछ दर्जन या सौ लोगों द्वारा बोली जाने वाली छोटी आदिवासी भाषाओं से लेकर 45–50 करोड़ भारतीयों की विराट भाषा हिंदी तक इस संकट के सामने अलग-अलग अंशों में लेकिन लगभग अटल और अपरिहार्य दिखते लोप के सामने निरुपाय खड़ी दिखती हैं.

भाषाओं का यह संकट अपने दीर्घावधि निहितार्थों और बहुआयामी प्रभावों में भारतीय सभ्यता का संकट बन जाता है. कारण सीधा है. भाषा और संस्कृति, राष्ट्र, राष्ट्र बोध और राष्ट्रीयता का गर्भनाल जैसा संबंध है. भाषा इनकी गर्भनाल है. भाषा के बिना किसी समाज/समूह की संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती. संस्कृति की सबसे बड़ी, सबसे प्रभावी और शक्तिशाली वाहिका भाषा ही होती है. भाषा में ही संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण उपादान, उसकी चिन्तन-आध्यात्मिक -ज्ञान-साहित्य-शास्त्रीय-लोक संपदा निर्मित, संचारित और प्रवाहित होती है. संस्कृति के अन्य रूप-साहित्य, ललित कलाएं, गीत संगीत, स्थापत्य, वेशभूषा, खानपान, पर्व त्यौहार, सामाजिक रीतियां, परंपराएं, लोकाचार आदि मुख्यतः भाषा के कारण और माध्यम से ही प्रकट होते हैं.

100 साल पहले 1918 में चेन्नई में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति स्थापित करने वाले महात्मा गांधी और उसके 40 साल बाद भारत के संविधान निर्माताओं ने भाषा संबंधी प्रावधान बनाते समय इसकी दूर-दूर तक कल्पना नहीं की थी कि जिन महान उद्देश्यों, राष्ट्रनिर्माण के जिन सपनों को सामने रखकर उन्होंने यह पुरुषार्थ किए थे, भारतीय राष्ट्र और उसके भविष्य का जो चित्र उन्होंने अपने सामने रखा था उसका साकार रूप 70 साल में ही इतना अलग, इतना विकृत हो जाएगा. लेकिन हमारी आंखों के सामने आज जो दृश्य है और निकट भविष्य में आकार लेता दिखाई दे रहा है वह इतना विकराल है, गहरे संस्कृतिमूलक आयामों में राष्ट्र निर्माताओं की कल्पना के इतना विपरीत है कि विश्वास नहीं होता.

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दासता से मुक्त अपनी मौलिक अंतः प्रेरणा और साभ्यतिक आभा के आलोक में भारत एक बार फिर चमचमाकर खड़ा होगा, अपना नवनिर्माण करेगा वह सपना आज अंग्रेजी के ऐसे भाषायी साम्राज्यवाद की जकड़ में है जो दिनोंदिन मजबूत होती जा रही है. अपने भक्तों के सम्मोहन से प्राण वायु पाती अंग्रेजी इस देश की 74% प्रतिभा, उद्यमिता के उच्चतम विकास के आगे पत्थर की दीवार की तरह खड़ी है। अंग्रेजी न जानने के कारण उच्च शिक्षा, ऊंचे अवसरों, रोजगारों से वंचित करोड़ों युवा प्रतिभाएं आज रोज कुंठित, अपमानित होने, अपने आत्मसम्मान, आत्मविश्वास को तिल तिल कर मरते देखने, पिछड़ जाने के लिए अभिशप्त हैं. अंग्रेजी से वंचित होना दोयम दर्जे का भारतीय होना है. केवल किसी भारतीय भाषा में जीने-काम करने वाला व्यक्ति अंग्रेजी वालों के सामने दीन हो जाता है. इस आत्मदैन्य को अपनी बातचीत में अधिक से अधिक अंग्रेजी शब्दों, अभिव्यक्तियों को ठूंसता हिन्दुस्तानी ही आज प्रतिनिधि हिन्दुस्तानी है.

वर्तमान से अब जरा भविष्य में चलते हैं. सन 2049 की कल्पना कीजिए. तब तक हमारा भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन चुका होगा. भारतीय प्रतिभा, उद्यमशीलता और हमारी बुनियादी लोकतांत्रिकता विश्वमंच पर भारत का अटल उदय सुनिश्चित कर चुके हैं. चरम गरीबी, कुपोषण, भुखमरी, शैक्षिक-आर्थिक पिछड़ापन बड़ी हद तक मिट चुके होंगे. आम भारतीयों का जीवन स्तर, सुविधाएं काफी ऊपर आ चुके होंगे. देश के 50–60% भाग का शहरीकरण हो चुका होगा. आधुनिक सुख सुविधाएं, तकनीकें यंत्र, साधन गांव-गांव तक पहुंच चुके होंगे. सारा देश डिजिटल जीवन पद्धति को बहुत बड़ी हद तक अपना चुका होगा. ब्राडबैंड और उसके माध्यम से मिलने वाली अनंत सेवाएं आम हो चुके होंगे. अब कल्पना के घोड़े दौड़ाइए और सोचिए-उस भारत के अधिकतर नागरिक अपने जीवन के सारे प्रमुख काम किस भाषा में कर रहे होंगे? पूरे देश में शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, शोध, पत्रकारिता, स्वास्थ्य, न्याय जैसे हर बड़े क्षेत्र में किस भाषा का प्रमुखता से उपयोग हो रहा होगा? वह देश भारत होगा, भिंडिया या सिर्फ इंडिया? उस इंडिया में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हमारी बड़ी 22 और 16 सौ से अधिक छोटी भाषाओं-बोलियों की स्थिति क्या होगी? कहां होंगी वे? होंगी भी कि नहीं?

मेरा अपना आकलन है कि रहेंगी तो जरूर लेकिन गरीबों की गरीब भाषाएं बनकर. हाशियों की भाषा बन कर. गालियों की भाषा बन कर. गीत-संगीत, मनोरंजन, फिल्में ये भाषाओं में बचे रहेंगे हालांकि इनमें भी तब तक आधी से ज्यादा अंग्रेजी प्रवेश कर चुकी होगी. आज बनने वाली हिंदी फिल्मों में आधी से ज्यादा के शीर्षक अब अंग्रेजी के होते हैं. उनके संवादों में हिंदी नहीं हिंग्लिश ज्यादा होती है. पूरी तरह अंग्रेजी में बनने वाली फिल्में और नेटफ्लिक्स जैसे आधुनिक मंचों पर भारतीय अंग्रेजी धारावाहिक आम हो चले हैं. यह प्रक्रिया बढ़ती ही जाएगी.

भाषाई अखबारों, फिल्मों और धारावाहिकों का विस्तार हो रहा है. अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों का आंखों देखा विवरण भी अब हिंदी व भाषाओं में होने लगा है. इस विस्तार पर मुग्ध भाषायी मीडिया और साहित्यकार अपनी भाषाओं पर किसी तरह के संकट की बात को अरण्य रोदन कह देते हैं. यह दूरदृष्टिहीनता है. भविष्य देखना है तो बच्चों की ओर देखना चाहिए. बच्चों की जो पीढ़ियां अधिकाधिक अंग्रेजी माध्यम से पढ़कर बड़ी होंगी वे क्या भाषाई अखबारों, साहित्य, पुस्तकों, टीवी समाचारों की पाठक-दर्शक होंगी? हिंदी के कितने लेखकों, पत्रकारों, राजभाषा अधिकारियों के बच्चे हिंदी माध्यम में पढ़ते हैं? इसलिए आज यह जो विस्तार दिख रहा है अगले 20–25 साल का खेल है. उसके बाद ऊपर से नीचे तक अंग्रेजी का ही वर्चस्व हर क्षेत्र में दिखेगा.

संसार में लगभग 6000 भाषाओं के होने का अनुमान है. भाषा शास्त्रियों की भविष्यवाणी है कि 21वीं सदी के अंत तक इनमें केवल 200 भाषाएं जीवित बचेंगी. इनमें भारत की सैकड़ों भाषाएं होंगी. भारत की आदिवासी भाषाओं में 196 तो अभी यूनेस्को के अनुसार ही गंभीर संकटग्रस्त भाषाएं हैं. संकटग्रस्त भाषाओं की इस वैश्विक सूची में भारत सबसे ऊपर है. यूनेस्को का भाषा एटलस 6000 में से 2500 भाषाओं को संकटग्रस्त बताता है. यूनेस्को के पूर्व महानिदेशक कोचिरो मत्सूरा ने कहा था 'एक भाषा की मृत्यु उसे बोलने वाले समुदाय की अमूर्त विरासत, परंपराओं और वाचिक अभिव्यक्तियों का नष्ट हो जाना है.'

भारत की अनुमानित 1957 में कम से कम 1416 लिपिहीन मातृभाषाएं हैं. ये सब आसन्न संकट में हैं. पर भारत के प्रभु और बुद्धिजीवी वर्ग तथा सामान्य जन को इन छोटी भाषाओं की तो क्या अपनी बड़ी भाषाओं की भी चिन्ता और उनके संकट को देखने समझने, बचाने में कोई रुचि नहीं है. ये वे विशाल भाषाएँ हैं जिन्हें भारत के 90% लोग बोलते बरतते हैं.

किसी भी समाज में भाषा के नियामक-निर्णायक तत्व क्या हैं? भाषा और समावेशी, समतामूलक, लोकतांत्रिक विकास का क्या संबंध है? भाषा और शिक्षा का क्या संबंध है? भाषा का राष्ट्र, राष्ट्र भाव और राष्ट्र निर्माण से क्या संबंध है? राष्ट्र बोध के केंद्रीय महत्व के इन बिंदुओं पर स्वतंत्रता के बाद भारत में सिर्फ एक बार 1967 में उच्चतम स्तर पर समग्रता से विचार मंथन हुआ था राष्ट्रीय उच्चतर अध्ययन संस्थान, शिमला में. उसके बाद उस तरह का कोई विचार कुंभ भाषाओं की बदलती स्थितियों, चुनौतियों और भविष्य पर हुआ हो ऐसा मेरी जानकारी में नहीं है.

इसलिए कोई आश्चर्य नहीं है कि विरल भाषिक समृद्धि और विविधताओं के भारत के पास 70 साल में भी अपनी कोई भाषा नीति नहीं है, न ही उसको बनाने का कोई गंभीर प्रयास किया गया है. अब भी अगर वह नहीं

बनाई गई तो अपनी इस अमूल्य और आधारभूत सांस्कृतिक संप्रभुता से दो-तीन पीढ़ियों में ही वंचित होकर हम पश्चिम, मुख्यतः अमेरिका के सांस्कृतिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक उपनिवेश बन जाएंगे.

भाषा मनुष्य की श्रेष्ठतम संपदा है. सारी मानवीय सभ्यताएं भाषा के माध्यम से ही विकसित हुई हैं. आदिम समाज तो हो सकते हैं लेकिन आदिम भाषाएं नहीं होतीं. संचार के वाचिक और लिखित माध्यम रूप में यह एक समाज के भावनात्मक जीवन और संस्कृति का सर्वोत्तम उद्घोष है. एक सांस्कृतिक संस्थान होने के कारण यह अपने बोलने बरतने वालों को एक जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में पहचान और अद्वितीयता देती है. जातीयता का एक प्रबल कारक होती है. समाज के सभी क्षेत्रों में- प्रबंधन, प्रशासन, वैज्ञानिक सूचनाओं, शिक्षा और शोध का माध्यम हो या ज्ञान निर्माण का, भाषा विकास का सबसे शक्तिशाली उपकरण है.

भाषा के विकास को हम उन भूमिकाओं से परिभाषित कर सकते हैं जिन्हें वह अपने समुदाय में निभाती है और जिन क्षेत्रों में वह प्रमुखता से इस्तेमाल की जाती है. किसी समुदाय में कोई भाषा कितनी प्रतिष्ठा पाती है यह सीधा इस बात पर निर्भर करता है कि वह भाषा अपने समुदाय की कितनी तरह की अभिव्यक्ति-आवश्यकताओं को पूरा करती है- जैसे व्यापार, अर्थतंत्र, तकनीकी, नवाचार, शोध, मौलिक वैज्ञानिक चिंतन, उद्यमिता, प्रबंधकीय निर्णय आदि. एक बहुभाषी और बहुजातीय समाज में उसकी आधिकारिक भाषा/भाषाएँ सभी वर्गों को तभी स्वीकार्य होती हैं जब वे शिक्षा, आजीविका, व्यवसाय, शोध, तकनीक, नवाचार, विकास और प्रशासनात्मक, प्रबंधकीय निर्णय प्रक्रियाओं की प्रमुख भाषा होती है.

भाषाओं के संकट से भी बड़ा संकट है उसको न देख पाना. कमोबेश यह समस्या सारे भाषा समूहों के साथ है. लेकिन हिंदी वालों के साथ तो रोग की हद तक है. बड़े-बड़े हिंदी के विद्वान और पत्रकार प्रतिप्रश्न करते हैं कि जब हिंदी अखबारों की प्रसार संख्या बढ़ रही है, हिंदी में सबसे ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, हिंदी फिल्म और टीवी उद्योग बढ़ रहा है तब हिंदी के सामने संकट कैसे हो सकता है?

कोई आश्चर्य नहीं है कि विरल भाषिक समृद्धि और विविधताओं में भारत के पास ७० साल में भी अपनी कोई भाषा नीति नहीं है, न ही उसको बनाने का कोई गंभीर प्रयास किया गया है।

संक्षिप्त उत्तर यह है. अब हम वाचिक युग में नहीं लिखित और डिजिटल युग में हैं. इसलिए भाषा का बोली रूप उसे बनाए रखने और बढ़ाने के लिए अपर्याप्त है. यह देखने की बजाय कि हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाओं को समझने-बोलने वालों की संख्या कितनी बढ़ रही है जो हमें देखना चाहिए वह यह है कि उस भाषा को अपनी इच्छा से पढ़ने-लिखने और सभी गंभीर कार्य क्षेत्रों में व्यवहार करने वाले लोग बढ़ रहे हैं या घट रहे हैं? उस भाषा माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या घट रही है या बढ़ रही है? ज्ञान ग्रहण, ज्ञान निर्माण, भविष्य निर्माण, न्याय,विज्ञान, प्रशासन, व्यापार, प्रबंधन, शोध आदि जीवन के निर्णायक क्षेत्रों में उस भाषा का प्रयोग घट रहा है या बढ़ रहा है?

सबसे बड़ा प्रश्न जिसे पूछते ही आपके सामने अपनी भाषा का भविष्य साकार खड़ा हो जाएगा यह है-आपकी भाषा की मांग कितनी है? है कि नहीं? घट रही है या बढ़ रही है? इस कसौटी पर हिंदी सहित सारी भारतीय भाषाओं को कसें तो उत्तर बिल्कुल साफ है. आज देश के छोटे से छोटे गांव में गरीब से गरीब व्यक्ति अपने बच्चों के लिए सिर्फ एक भाषा मांग रहा है- अंग्रेजी. किसी भी भारतीय भाषा की मांग नहीं है भारत में. इस बाजार युग में जिस चीज की मांग नहीं है वह कैसे चलेगी, कैसे बचेगी?

अभी देश के 30 से 40% बच्चे अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पढ़ रहे हैं. भले ही कितनी अधकचरी अंग्रेजी वहां पढ़ाई जाती हो, खुद शिक्षकों को ठीक से आती हो या नहीं, यह निर्विवाद रूप से सबका अनुभव है कि जो बच्चा बचपन से एक बार अंग्रेजी माध्यम में पढ़ गया वह कभी अपने परिवार और परिवेश की, विरासत की भाषा का नहीं होता. उसमें अपनी मातृभाषा/परिवेश भाषा से प्रेम, लगाव, गर्व की जगह एक हेयभाव और नापसंदगी पैदा होती जाती है जो आयु के साथ बढ़ती ही रहती है. अपनी भाषा से यह दूरी उसे भाषा से परिचित तो बनाए रखती है लेकिन उसमें कुछ भी गंभीर पढ़ने वाला और काम करने वाला नहीं रहने

देती. भारत के हर मध्यवर्गीय परिवार की यही स्थिति है.

10 साल पहले के एक सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार भारत की सभी भाषा-माध्यम विद्यालयों में प्रवेश दर हर साल घट रही थी. सिर्फ दो भाषाएं अपवाद थीं- अंग्रेजी और हिंदी. अंग्रेजी में यह वार्षिक वृद्धि दर 250% से अधिक थी. हिंदी में लगभग 35%। अब जब हिंदीभाषी राज्यों में भी सरकारें हिंदी-माध्यम विद्यालय बंद या बदल कर उन्हें अंग्रेजी-माध्यम करती जा रही है तो हिंदी का भविष्य स्पष्ट है. ठीक यही चीज हर प्रदेश में हो रही है.

यूनेस्को के कहने पर विश्व के श्रेष्ठ भाषाविदों ने किसी भी भाषा की जीवंतता और संकट ग्रस्तता नापने के लिए 9 कसौटियां निर्धारित की हैं. पहली है, एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी के बीच उस भाषा का अंतरण, जाना कितना हो रहा है? दूसरी कसौटियों में प्रमुख हैं ज्ञान विज्ञान के आधुनिक क्षेत्रों में उस भाषा में काम हो रहा है या नहीं, घट रहा है या बढ़ रहा है? वह भाषा नई तकनीक और आधुनिक माध्यमों को कितना अपना रही है? उस भाषा के विविध रूपों का दस्तावेजीकरण कितना और किस स्तर का है? उस समाज की महत्वपूर्ण राजकीय/अराजकीय संस्थाओं की उस भाषा के बारे में नीतियां और रुख कैसे हैं? अंतिम लेकिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण कसौटी है उस भाषा समुदाय का अपनी भाषा के प्रति रुख क्या है, भाव क्या है?

इनमें से किसी भी कसौटी पर किसी भी भारतीय भाषा को तोल लीजिए तुरंत समझ में आ जाएगा कि भविष्य के संकेत संकट की ओर इशारा करते हैं या विकास-विस्तार की ओर.

एक बार चलते हैं उस वैश्विक महाशक्ति, आधुनिक, वैश्वीकृत, संपन्न-सबल इंडिया में जब हर नागरिक अपने जीवन का हर महत्वपूर्ण काम सिर्फ अंग्रेजी में कर रहा होगा, उसमें भारत, भारतीयता और भारतीय सभ्यता की अपनी अविच्छिन्न यात्रा में जो समूची साहित्यिक-सांस्कृतिक -ज्ञान-लौकिक-आध्यात्मिक संपदा अर्जित की है वह इस संपदा की निर्मात्री भाषाओं के बिना कैसे जीवंत और जीवित रहेगी, अगली पीढ़ियों तक कैसे पहुंचेगी? क्या अंग्रेजी यह कर सकती है?

रंगरूप में भारतीय लेकिन दिलो-दिमाग, जीवन शैली, सोच-संस्कार से अमेरिका के उन नकलची नागरिकों का भारत-बोध, अपनी साभ्यतिक ऊंचाईयों-विरासत की स्मृति, सांस्कृतिक संप्रभुता का अहसास कैसा होगा?

कम से कम मुझे स्पष्ट दिखता है कि समूची भारतीय सभ्यता लोप, विस्मृति और भयानक हाशियाकरण की कगार पर खड़ी है. उसके पास शायद सिर्फ दो पीढ़ियों का समय है बचने के लिए. यानि हमारी और हमारे बच्चों की पीढ़ी आज अगर चाहे, राजसत्ता को बुद्धि आ जाए, समूचा राष्ट्र संकल्पबद्ध हो, राष्ट्रीय और निजी महत्व के हर क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को स्थापित करने में जुटे तो इस प्रक्रिया को हम रोककर उलट सकते हैं. वरना शैशव से ही अंग्रेजी/अंग्रेजियत में पली, पढ़ी और बढ़ी पीढ़ियां चाहेंगी भी तो इस संपदा और सभ्यता को पुनर्जीवित करना उनके लिए असंभव नहीं तो असंभव जैसा जरूर होगा.

यहां महत्वपूर्ण हो जाती है प्रत्येक भाषा में काम करने, लिखने वाले साहित्यकारों -लेखकों-विद्वानों- बुद्धिजीवियों -शिक्षाविदों, मीडिया, पत्रकारों और संपूर्ण नागर समाज की भूमिका. यही वे वर्ग हैं जो अपने अपने क्षेत्रों में, अपने भाषा समाज में एक विमर्श उत्पन्न करते हैं, चिंतन को आगे बढ़ाते हैं, महत्वपूर्ण चिंताओं,संकटों और सरोकारों के प्रति समाज को जागरूक करते हैं.

कमाल यह है कि ऐसे अभूतपूर्व प्राणांतक संकट से देश का लगभग समूचा नियंता प्रभु वर्ग, नीति निर्माता, बुद्धिजीवी, शिक्षाविद, राजनीतिक दल, संसद, विधानसभाएं, सरकारें, मीडिया और व्यापक नागर समाज अनभिज्ञ और इसलिए उदासीन दिखते हैं. इस विराट सभ्यतामूलक संकट का मुख्य कारण, उस का सबसे बड़ा स्रोत सीधा और स्पष्ट है-अंग्रेजी. और उसके प्रति हमारा शर्मनाक दासतापूर्ण और शर्मनाक सम्मोहन.

भारतीय चरित्र इजराइली चरित्र जैसा नहीं है जिसने 2000 साल से मृत पड़ी हिब्रू को आज वैज्ञानिक शोध, नवाचार और आधुनिक ज्ञान निर्माण की श्रेष्ठतम वैश्विक भाषाओं में एक बना दिया है. जिसके बल पर 40 लाख की जनसंख्या वाला इजरायल एक दर्जन से ज्यादा विज्ञान के नोबेल पुरस्कार जीत चुका है. सारे इस्लामी देशों की शत्रुता के बावजूद अपनी पूरी अस्मिता, धमक और शक्ति के साथ अजेय बना विश्व पटल पर विराजमान है. विश्व गुरु बनने के सपने देखता भारत चाहे तो इजराइल से प्रेरणा ले सकता है.

(नवनीत के लिए अगस्त, 2019 में लिखित, सितंबर अंक में प्रकाशित)

नौकर नहीं, अध्यापक बनें

✍डॉ.संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी'
साउथ वैस्ट गारो हिल्स, मेघालय

कैरियर(जीवन-वृत्ति विकास) किसी भी व्यक्ति के जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है. जीवन-वृत्ति का चयन उसकी जीवन यात्रा में महत्वपूर्ण दिशादर्शन का कार्य करता है. युवाओं के चहेते संन्यासी स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस को कैरियर दिवस के रूप में मनाने की बात भी की जाती है, इससे यह ही स्पष्ट होता है कि युवाओं के लिए कैरियर का चयन व उसमें सफलता की बुलन्दियों को छूना, ना केवल वैयक्तिक विकास के लिए आवश्यक है वरन् पारिवारिक, राष्ट्रीय व सामाजिक सन्दर्भों में भी महत्वपूर्ण होता है.

कैरियर अंग्रेजी का शब्द है. इसके उच्चारण को लेकर भी मतभेद हैं. कुछ लोग इसका उच्चारण करियर करके करते हैं तो कुछ कैरियर; मुझे तो कैरियर कहना ही अच्छा लगता है. अतः मैं इसी शब्द का प्रयोग करता हूँ.

पारंपरिक समाज में कैरियर के सीमित विकल्प ही उपलब्ध होते थे. वर्तमान समय में औद्योगिक विकास के साथ सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के युग में नित नवीन क्षेत्रों का विकास हुआ है किंतु पारंपरिक जीवन-वृत्ति का महत्व किसी भी प्रकार से कम नहीं हुआ है. पारंपरिक कैरियर के विभिन्न क्षेत्रों में सबसे महत्वपूर्ण व सम्मानजनक कार्य अध्यापन रहा है. अध्यापक को गुरू का सम्मानजनक स्थान प्राप्त था. कबीर जी ने तो यहाँ तक कह दिया था-

गुरू-गोविन्द दोऊ खड़े,
काके लागूँ पायँ।
बलिहारी गुरू आपने,
गोविन्द दियो बताय।।

शिक्षण पेशे की आवश्यकता उस समय भी थी और आज भी है. ज्ञान के विकास के साथ-साथ इसकी आवश्यकता बढ़ी ही है. जनसंख्या वृद्धि व शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य के साथ-साथ शिक्षकों की आवश्यकता निःसन्देह बढ़ी है. हाँ! अध्यापन पेशे के नए-नए रूप भी सामने आये हैं. अध्यापन एक नौकरी मात्र नहीं है. यह समाज सेवा है. अध्यापक को युग-निर्माता कहा गया है.

जब व्यक्ति अध्यापन पेशे को मात्र नौकरी के रूप में लेता है, तब वह अध्यापक के सम्मान को ठेस पहुँचा रहा होता है. नौकर को अध्यापक के पद पर नियुक्ति पा लेने से अध्यापक का सम्मान नहीं मिल जायेगा.

अध्यापक है, युग निर्माता।
छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता।।

जब व्यक्ति अध्यापन पेशे को मात्र नौकरी के रूप में लेता है, तब वह अध्यापक के सम्मान को ठेस पहुँचा रहा होता है. नौकर को अध्यापक के पद पर नियुक्ति पा लेने से अध्यापक का सम्मान नहीं मिल जायेगा. अध्यापक के नौकर बन जाने के कारण ही जीवन मूल्यों का क्षरण हो रहा है. जीवन मूल्यों के क्षरण के कारण अध्यापक के मान-सम्मान में कमी आई है या यूँ भी कहा जा सकता है कि अध्यापक के मान-सम्मान में कमी होने के कारण ही जीवन मूल्यों का क्षरण हो रहा है और समाज नैतिक मानदण्डों की पुनर्स्थापना के प्रयत्न कर रहा है.

संख्याबल के आधुनिक युग में कई बार गुणवत्ता पिछड़ती हुई दिखाई देती है। यही स्थिति अध्यापन पेशे के संदर्भ में भी कही जा सकती है. अच्छे, समर्पित व निष्ठावान अध्यापकों का अभाव ही दिखाई देता है. नौकरी के लिए बेरोजगारों की कितनी भी लंबी लाइनें हों किंतु अध्यापकों की कमी निरंतर बनी हुई है.

अध्यापन पेशे के प्रति आकर्षण भले ही कम दिखाई देता हो, बहुत बड़ी संख्या में युवक-युवतियाँ अध्यापन पेशे को अपना रहे हैं. हाँ! दिल से अध्यापक बनने की इच्छा कम ही लोगों में दिखाई देती है. अधिकांश अध्यापक मजबूरी में कोई इच्छित नौकरी न मिलने के कारण अध यापन का काम करने लगते हैं. वास्तव में वे टीचर नहीं, वाई-चांस टीचर होते हैं और वे न तो स्वयं अपने साथ न्याय कर पाते हैं और न ही अध्यापन पेशे के साथ.

अच्छे अध्यापक के रूप में विकसित होने के लिए निष्ठा व समर्पण अनिवार्य तत्व हैं. ग्रेच्युटी के एक मुकदमे की सुनवाई में उच्चतम न्यायालय ने शिक्षकों की ग्रेच्युटी की माँग को ठुकराते हुए अपने निर्णय में स्पष्ट रूप लिखा था कि अध्यापक नौकर नहीं समाज सेवक है. **शेष पृष्ठ 17..पर**

भारत भाषा प्रहरी : डा. अमरनाथ

-डा. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'
निदेशक, वैश्विक हिंदी सम्मेलन

नौवां विश्व हिन्दी सम्मेलन, जो 22 सितंबर से 24 सितंबर 2012 तक दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहांसबर्ग में आयोजित हुआ था. वहाँ दूसरे दिन किसी सत्र की समाप्ति पर मैंने देखा कि सभागार के बाहर एक व्यक्ति कुछ पर्चे बांट रहा है. साथ ही वे कुछ लोगों के साथ चर्चा भी कर रहे थे. चर्चा में हिंदी क्षेत्र की बोलियों को संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल किए जाने पर चिंता व्यक्त की जी रही थी. मेरे भी कान खड़े हुए. मैंने उस व्यक्ति से बातचीत की, मामले को समझा और फिर निश्चय किया कि इस प्रकार हिंदी के टुकड़े-टुकड़े न हों, हिंदी कमजोर न हो, इसके लिए मैं हर संभव प्रयास करूंगा. वे सज्जन कोई और नहीं बल्कि कलकत्ता विश्ववद्यालय के प्रोफेंसर डा. अमरनाथ थे. वहाँ तो उनसे विशेष परिचय नहीं हुआ लेकिन भारत लौटने के कुछ समय बाद इसी मुद्दे पर मैंने पर्चे से नंबर लेकर उनसे संपर्क साधा और इस प्रकार हिंदी को बचाने की इस साझा सोच और अभियान के माध्यम से मुझे उन्हें और उनके 'हिन्दी बचाओ मंच' के अभियान को जानने/समझने का अवसर मिला.

वर्ष 2016 में हमारी हिन्दी जब टूटने के कगार पर थी, भोजपुरी और राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने वाला बिल संसद में पेश होने वाला था, डा. अमरनाथ ने 'हिन्दी बचाओ मंच' के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलाकर, दिल्ली, कोलकाता जैसे शहरों में धरना और प्रदर्शन करके, भारत के गृहमंत्री से मिलकर, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अन्य दर्जनों पक्ष-विपक्ष के नेताओं और मंत्रियों को पत्र लिखकर, देश भर में यात्राएं करके और जन-जागरण अभियान चलाकर, दर्जनों लेख लिखकर, सभी बड़े शहरों में प्रेस-

कांफ्रेंस करके अन्ततः हिन्दी को विखंडित होने से बचा लिया. आज भोजपुरी और राजस्थानी को संविधान की आठवी अनुसूची की मांग करने वालों के विरोध में और हिन्दी की एकता को बनाए रखने के पक्ष में देश भर में बुद्धिजीवियों और भाषा-प्रेमियों की जो एक बड़ी जमात मुखर हुई है, तो इसके पीछे डा. अमरनाथ और उनके संगठन 'हिन्दी बचाओ मंच' द्वारा चलाए गए आन्दोलन की महती भूमिका है.

डा. अमरनाथ (वास्तविक नाम प्रो. अमरनाथ शर्मा) का जन्म गोरखपुर जनपद (संप्रति महाराजगंज) के रामपुर बुजुर्ग नामक गाँव में सन् 1954 में हुआ. उनकी आरंभिक शिक्षा गांव के आस-पास के विद्यालयों में और उच्च्व शिक्षा गोरखपुर विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से उन्होंने एम.ए. और पी-एच.डी की उपाधियाँ प्राप्त कीं. आरंभ में वे गोरखपुर विश्वविद्यालय से संबद्ध नेशनल पोस्टग्रेजुएट कालेज में प्राध्यापक थे. 1994 में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यापन करने आए और तेईस वर्ष तक निरंतर अध्यापन, शोध निर्देशन तथा विभिन्न प्रशासनिक दायित्व निभाते हुए सन् 2017 में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया. इसके बाद से वे स्वतंत्र रूप से लेखन और सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं.

कविता से अपनी रचना-यात्रा शुरू करने वाले डा. अमरनाथ सामाजिक - आर्थिक विषमता से जुड़े सवालों से लगातार जूझते रहे हैं. उनका विश्वास है कि लेखन में ऊर्जा सामाजिक संघर्षों से आती है. वे कई सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनो से जुड़े रहे और आज भी जुड़े हुए हैं. उन्होंने स्वयं भी कई संस्थाओं का गठन और संचालन किया जिनमें 'चेतना सास्कृतिक मंच', 'आचार्य सत्यदेव शास्त्री स्मारक पुस्तकालय', 'अपनी भाषा', 'हिन्दी बचाओ मंच', 'श्री चंद्रिका शर्मा फूला देवी स्मृति सेवा ट्रस्ट' तथा 'ग्राम स्वराज पुस्तकालय' प्रमुख हैं. वे सन् 2000 से 'अपनी भाषा' की पत्रिका 'भाषा विमर्श' का तथा सन् 2013 से श्री चंद्रिका शर्मा फूलादेवी स्मृति सेवा ट्रस्ट की पत्रिका 'गांव' का संपादन कर रहे हैं. डा. अमरनाथ पिछली सदी के अन्तिम दशकों में जनवादी लेखक संघ से भी संबद्ध रहे और उसकी केन्द्रीय समिति के सदस्य थे किन्तु बाद में वैचारिक

मतभेद के चलते वे उससे अलग हो गए. वे देश के विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के सबसे बड़े और पुराने संगठन भारतीय हिन्दी परिषद के उपसभापति भी रह चुके हैं.

हिन्दी जगत में डा. अमरनाथ की पहचान एक सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद् की है. उनकी सर्वाधिक प्रतिष्ठित और चर्चित पुस्तक है, 'हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली'. उच्च शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों से लेकर विश्वविद्यालयों के शिक्षकों तक में यह अत्यंत लोकप्रिय है. इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद इस पर जो प्रतिक्रियाएं आईं उनमें किसी ने इसे 'साहित्यिक अवधारणाओं का प्रामाणिक दस्तावेज' कहा तो किसी नें 'व्यवस्थित जानकारी का विश्वकोश' (हिन्दुस्तान). इस ग्रंथ में हिन्दी आलोचना जगत में प्रचलित 212 अवधारणाओं का प्रामाणिक विश्लेषण है.

डा. अमरनाथ की दूसरी बहुचर्चित पुस्तक है 'हिन्दी जाति'. इस पुस्तक का भी पाठकों द्वारा भरपूर स्वागत हुआ. 'सेतु', 'वागर्थ', 'सब लोग' आदि में इसकी समीक्षाएं प्रकाशित हुईं. 'जनसत्ता' (दिल्ली) ने इस पुस्तक के बारे में लिखा, 'इन दिनों हिन्दी से अभिन्न रूप से संबद्ध रहने वाली बोलियों के क्षेत्रों से हिन्दी की अस्मिता को जो चुनौती मिल रही है, हिन्दी के समानांतर इन बोलियों को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए आंदोलन खड़े किए जा रहे हैं, बोलियों के हितसंरक्षण के नाम पर भोजपुरी, मैथिली, मगही अकादमियों की स्थापना की जा रही है, इससे हिन्दी की एकता में दरारें पैदा होने लगी हैं. अमरनाथ की यह पुस्तक यह कार्य खूबसूरती से संपन्न करती है और बोलियों के अंधमोह और प्रेम में जुनूनी बने हुए बोली प्रेमियों के बीच हिन्दी जाति की वांछनीयता को उजागर करती हुई उन्हें हिन्दी प्रेम और हित के लिए प्रेरित करती है.'

इसके अलावा आपके सैकड़ों शोध-पत्र, आलोचनात्मक तथा वैचारिक निबंध देश की विभिन्न महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं.

डा. अमरनाथ के सबसे प्रिय कवि तुलसी है. रामचरितमानस का उन्होंने एकाधिक बार अध्ययन किया हैं. वे वेदों, उपनिषदों, गीता, रामायण आदि के भी गहरे अध्येता हैं. यही नहीं उन्होंने कुरान और बाइबिल का भी अध्ययन किया है. हालांकि देवी/देवताओं में उनका विश्वास नहीं है. अपनी मान्यताओं में वे विशुद्ध भौतिकवादी हैं.

राजनीति में डा. अमरनाथ की गहरी रुचि है किन्तु वे कभी किसी राजनीतिक दल के सदस्य नहीं रहे. वे सत्ता-परिवर्तन में नहीं, बल्कि व्यवस्था-परिवर्तन में विश्वास करते हैं. उनपर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है, किन्तु व्यवस्था-परिवर्तन के लिए किसी तरह की हिंसा का सहारा लेने के वे पूर्णतः विरोधी हैं. उन्हें मार्क्स का समाजवाद तो चाहिए किन्तु गाँधी के रास्ते पर चलकर. वे कहते हैं कि भारत के संविधान में भी तो समाजवाद का ही सपना देखा गया है.

वे कहते हैं, 'भाषा, संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा होती है. समाज की जैसी संस्कृति होती है, भाषा का चरित्र भी उसी तरह का बन जाता है. दुनिया भर को लूटने की संस्कृति को जिस जाति (अंग्रेज) ने ईजाद किया, उसकी भाषा में स्नेह और शीतलता, करुणा और त्याग, संगीत और लालित्य तलाशना बालू से तेल निकालने जैसा है. हमारे देश में अंग्रेजी वर्चस्व की भाषा है, विभेद की भाषा है और अहंकार की भाषा है. जब हमारे देश का कोई बच्चा आरंभ से ही इस भाषा के माध्यम से शिक्षा लेने लगता है तो वह धीरे-धीरे अपनी जमीन से कटता जाता है. अपनी धरती, अपने परिवेश और अपने समाज से उसका लगाव कम होने लगता है.' (हिन्दी जाति, पृष्ठ- 16)

जस्टिस शारदाचरण मित्र स्मृति भाषा-सेतु सम्मान से अबतक जिन्हें सम्मानित किया जा चुका है उनमें सिद्धेश, शंकरलाल पुरोहित, चंद्रकान्त बांदिवडेकर, बी. वै. ललिताम्बा, वी. रा. जगन्नाथन, चमन लाल, ए. अरविन्दाक्षन, बिन्दु भट्ट, विजयराघव रेड्डी, चमनलाल सप्रू, राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, दामोदर खड़से, रामचंद्र परमेश्वर हेगड़े, बीना बुदकी, इबोहल सिंह कांग्जम आदि प्रमुख हैं.

'अपनी भाषा' की संगोष्ठियों में शामिल होकर लोग गौरव का अनुभव करते हैं. महाश्वेता देवी, नामवर सिंह, नीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती, सुनील गंगोपाध्याय, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पवित्र सरकार, रुद्रप्रसाद सेनगुप्त, उदयनारायण सिंह, रामकुमार मुखोपाध्याय, वेद प्रताप वैदिक, चंद्रकान्त बांदिवडेकर, बालशौरि रेड्डी, परमानंद पाँचाल, बलदेव बंशी, बीरेन्द्र कुमार बर्नवाल, कैलाशचंद्र पंत, चित्रा मुद्गल, मृदुला सिन्हा, हिमांशु जोशी, कृष्णदत्त पालीवाल, कमलकिशोर गोयनका, प्रभु जोशी, राहुल देव, कुंवरपाल सिंह, कृष्णबिहारी मिश्र, प्रभाकर श्रोत्रिय, नवनीता देवसेन, हरिवंश, गंगा प्रसाद विमल, प्रतिभा अग्रवाल, रवीन्द्र कालिया जैसे बांगला, ओड़िया, असमिया, मराठी,

ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता का बहुत ही अभिनव कार्यक्रम हैः डॉ० लीना मेंहदले

१६ जून २०२०, प्रयागराज. ''संस्थान द्वारा कोरोना काल में ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता का बहुत ही अभिनव कार्यक्रम चलाया गया जो निश्चित ही सराहनीय एवं उत्तम कार्य है. जो निश्चय ही कोरोना काल में लोगों के लिए लाभप्रद साबित हुआ होगा. ऐसे आयोजनों की वास्तव में आवश्यकता थी.' उक्त विचार विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा तीसरे दौर के ऑन लाईन लाक डाउन प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषणा के अवसर पर ऑन लाईन मुख्य अतिथि के रुप में शामिल हुई, महाराष्ट्र से डॉ० लीना मेंहदले (आई.ए.एस.) जो मुख्य सुचना आयुक्त, गोवा के पद से सेवानिवृत्त है, ने कहीं.

आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि आयोजन के प्रथम एवं द्वितीय चरण के परिणाम पूर्व में ही घोषित किए जा चुके है. तीसरे चरण में राष्ट्र स्तरीय लाक डाउन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. काव्य प्रतियोगिता-3 में ऑन लाईन वीडियों के माध्यम से 10 राज्यों के 28 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया. जिसमें डॉ० रेनू सिरोया कुमुदिनी' उदयपुर, राजस्थान को प्रथम, श्रीमती प्रियंका कटारे ग्वालियर, म.प्र. को द्वितीय, श्रीमती वाणी बरठाकुर 'विभा', शोणितपुर, असम को तृतीय, श्री सीताराम पटेल, जांजगीर चांपा, छ. ग. को चतुर्थ एवं श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, सोनभद्र, उ. प्र. तथा लाक डाउन प्रश्नोत्तरी में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 15 राज्यों के लगभग 1500 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया. 21 दिनों तक चली इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों में श्रीमती सपना गोस्वामी, प्रधानाचार्या, निशा ज्योति संस्कार भारती, प्रयागराज को प्रथम, श्री पवन दूबे, उप निरीक्षक, आईटीबीपी, नई दिल्ली को द्वितीय, श्री सतीश कुमार मिश्र-किला, प्रयागराज को तृतीय, डॉ. नीलिमा दूबे, एसोसिएट प्रोफसेर, बंगलौर, कर्नाटक को चौथे स्थान पर रही.

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, प्राचार्य, अहमदनगर, महाराष्ट्र ने कहा कि संस्थान आज अपने 24वां वर्ष पूर्ण कर रहा है. हम निरन्तर हिन्दी सेवा के लिए कार्य कर रहे है और अगले वर्ष अपना रजत जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाएंगे. काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ० मेदिनी अंजनेकर, एसोसिएट

डा. लीना मेंहदले, मुख्य अतिथि

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख

निर्णायकः डॉ० दिवाकर दिनेश गौड़, डॉ. चन्द्रशेखर सिंह, डॉ० नीतू सिंह राय

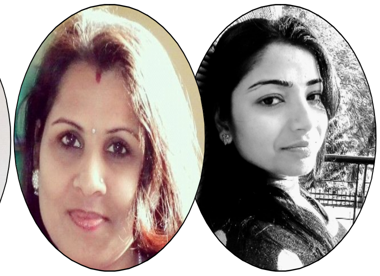

बायें से दाये श्रीमती सपना गोस्वामी, श्री पवन दूबे, श्री सतीश कुमार मिश्र, डॉ० नीलम दूबे बायें से दाये डॉ० रेनू सिरोया 'कुमुदिनी', श्रीमती प्रियंका कटारे

बायें से दाये श्रीमती वाणी बरठाकुर 'विभा', श्री सीतारामम पटेल,

प्रोफेसर भवन्स महाविद्यालय, अंधेरी, मुंबई, डॉ. हरिपाल सिंह संपादक नागरी संगम, दिल्ली, श्री नरेन्द्र भूषण पूर्व अपर निदेशक, कोषागार, लखनऊ रहे.

प्रतियोगिताओं का दौर जारी है. अभी लाक डाउन 06 तक चलेगा. इसके बाद (लाक डाउन 01 से 03) के विजेताओं का उत्तम तीन, (लाक डाउन 04 से 06) के विजेताओं का उत्तम तीन विजेताओं का सर्वोत्तम तीन के चयन की प्रतियोगिता होगी. हिन्दी पखवाड़ा में इस प्रतियोगिता का समापन हो जाएगा. तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता के प्रत्येक चरण के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले प्रतिभागी काव्य सम्राट प्रतियोगिता के प्रथम चरण के सीधे प्रतिभागी , उत्तम तीन के विजयी प्रतिभागी सीधे द्वितीय चरण एवं सवोत्तम तीन के विजयी प्रतिभागी सीधे तीसरे यानि अंतिम चरण के प्रतिभागी माने जाएंगे. लेकिन प्राथमिक औपचारिकताएं आपको पूर्ण करनी होगी. अंतिम चरण की प्रतियोगिता साहित्य मेला 2021 में सम्पन्न होगी. जिसका विवरण इस पत्रिका में समाहित है.

शेष पृष्ठ 15 का....नौकर नहीं, अध्यापक बनें

वास्तविकता यही है कि अध्यापक समाज सेवक के रूप में ही सम्मान पाता रहा है. समाज सेवक के रूप में समर्पित होने के कारण ही अध्यापक को गुरू के रूप में सम्मान मिलता रहा है. इसी सेवा के कारण ही उसे ईश्वर से भी अधिक माना जाता रहा है. किन्तु यदि हम अध्यापन को एक नौकरी के रूप में लेते हैं तो उस सम्मान के हकदार नहीं रह जाते. नौकर कभी सम्मान का पात्र नहीं हो सकता. इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने आप को अध्यापक से नौकर की श्रेणी में न जाने दें. इसके लिए आवश्यक है कि हम अध्यापक पेशे के महत्व और इससे जुड़े कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को समझें.

हमें समझना होगा कि अध्यापक को युग-निर्माता क्यों कहा जाता है? हम अध्यापक की नौकरी मात्र करके युगनिर्माता नहीं हो सकते. युग के निर्माण के लिए अपने आप को दीपक की भाँति जलाकर विद्यार्थियों में ज्योति का संचार करना होगा. विद्यार्थियों को केवल नौकरी-पेशे के लिए तैयार करने से बाज आना होगा और उन्हें जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करने के प्रयास करने होंगे.

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण 1-प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था 3-प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4-विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें **प्रसार सचिव,** विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल. आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011ई—मेलः sahityaseva@rediffmail.com

चोर मौज करें

अरबो खाकर भाग गये
और आप कहते हैं
तुम्हारा पैसा
सरकार का हो गया
मेरी मेहनत की कमाई
उस पर बैंक की न जाने
कितनी कटौती
मेरे बचे-खुचे पैसों
पर डाका क्यों
मैंने क्या किया

उन्हें पकड़ो
हमारा पैसा
हम ही चोर
कैसे भरोसा करें तुमपर
कोई दिवालिया
कोई भगोड़ा हो गया
इसमें मेरे खून-पसीने
का क्या दोष
ये कैसा नियम है
क्या सही है दोष हमारा

हमें नहीं आता
लूटकर भागना
हमें नहीं पता कैसे
किया जाता है
खुद को दिवालिया घोषित
ईमानदारी से रहना
कब से अपराध
कहलाने लगा।
क्या यही कानून है
चोर मौज करें।
और शरीफ लूटा जाये।

''रहस्य''

एक दूसरे के लिए
रहस्य होते है
स्त्री-पुरूष
और जब ये रहस्य
खुलता है
ते लम्बी जंजीर में
बंधे पाते हैं
एक दूसरे को
कुछ जंजीर को जीवन
मान लेते हैं
कुछ तोड़ देते हैं
लेकिन फिर रहस्य
के तिलिस्म में
उलझने के लिए

परेशान दिखते हैं।
बंधा-बंधाया जीवन
व्यवस्थित जीवन
मांग-पूर्ति का जीवन
जोड़ता तो है
किन्तु बहुत अन्दर
बहुत कुछ तोड़ता भी है
प्यार, शादी
स्त्री-पुरूष
बच्चे, परिवार
सब ठीक-ठाक है
फिर भी कोई रहस्य
बरकरार है
लम्पट, चरित्रहीन कह लो

लेकिन जाने हुए रहस्य
को पुनः जानने के लिए
भटकते पाया है लोगों को
और इसी भटकन में
न जाने क्या-क्या भोगा
और अन्त में पाया
कुछ भी नहीं
रहस्य की चादर
आकर्षण की गागर
भरती ही नहीं
पता नहीं क्या रहस्य है?

–nsosUnz dqekj feJk,
छिन्दवाड़ा, म.प्र.

महल

बहुत रंगीन सपनों का
महल, एक-एक इच्छा
की ईंट लगाकर बनाया था मैंने
उस महल का आधार थे तुम,
पर क्यूँ बिखर गई मेरे
महल की ईंटे,
तुम संग अग्नि फेरे लेते ही।
षायद तुम झाँक भी न पाये,
मेरे उस महल की खिड़की से
चहुँ ओर ही चक्कर लगाते रहे

समय का पहिया, नींव भी
कमजोर कर गया।
हिल गई नींव एक दिन
और टूट गई मैं
फिर तुम ढूंढने लगे उसमें
अपनी उम्मीदों के साये,
ध्वस्त हो चुका है सब
अब सिर्फ अवशेष बचे हैं,
मिट्टी में मिलने के लिये।

सिर्फ तुम्हारा ताकना ही रह जायेगा
चूर-चूर हुई इंटो को
टूटते हुए दरवाजों को
और महल के उस बड़े दरवाजे को
जिस रास्ते आए थे तुम।

– शबनम शर्मा,
सिरमौर, हि.प्र.

शब्द

शब्द बहुत हैं अर्थ बहुत हैं किन्तु कहीं अनर्थ नहीं हैं।
शब्दों में संदेश छिपा है वह भी मितवा व्यर्थ नहीं हैं।
पारा भी बढ़ रहा निरंतर और साथ बढ़ रहा संक्रमण।
जहाँ जहाँ लापरवाही हुई कोरोना किया आक्रमण।

घर से निकलो माक्स लगाकर सेनेटायजर रहे साथ में।
दूर दूर से करो नमस्ते हाथ ना देना किसी हाथ में।
घर में घुसने पर पहले तुम सेनेटाईज करो स्वयम् को।
कपड़े बदलो और नहाओं फिर छूना तुम प्रिय परम को।

तुम्हें बता दूँ बहुत प्रिय हो तुम मुझको तब ही कहता हूँ।
तुम भी रहो इसलिए मैं भी घर के अन्दर ही रहता हूँ।
अभी निकलना नहीं सुरक्षित अभी रहो घर के ही अन्दर।
लॉकडाउन में छत के ऊपर देखो नहीं आ रहे बन्दर।

तुम सुविज्ञ हो समझदार हो तुम पर हम सबकी आषा है।
लॉकडाउन को निभा रहे हो तुम इसके भी प्रत्याषा है।
कुछ दिन एकाकी रहने पर जब भी होगा मिलन प्रिय वर।
करो कल्पना कितने होगे प्रेम पगे वह क्षण अति सुन्दर।

आवश्यक है और अभी तुम लक्ष्मण रेखा मत लाँघों।
व्यर्थ जरूरत या इच्छाऐं चलो कि खूँटी पर टागों।
धीरे धीरे यह दुॅदिन भी मिट जायेंगे खो जायेंगे।
अभी उतावलापन मत करना बन्धन से मुक्ति पायेंगे।
शब्द बहुत हैं अर्थ बहुत हैं किन्तु कहीं अनर्थ नहीं हैं।
शब्दों में संदेश छिपा है वह भी मितवा व्यर्थ नहीं हैं।
पारा भी बढ़ रहा निरंतर और साथ बढ़ रहा संक्रमण।
जहाँ जहाँ लापरवाही हुई कोरोना किया आक्रमण।

घर से निकलो माक्स लगाकर सेनेटायजर रहे साथ में।
दूर दूर से करो नमस्ते हाथ ना देना किसी हाथ में।
घर में घुसने पर पहले तुम सेनेटाईज करो स्वयम् को।
कपड़े बदलो और नहाओं फिर छूना तुम प्रिय परम को।

तुम्हें बता दूँ बहुत प्रिय हो तुम मुझको तब ही कहता हूँ।
तुम भी रहो इसलिए मैं भी घर के अन्दर ही रहता हूँ।
अभी निकलना नहीं सुरक्षित अभी रहो घर के ही अन्दर।
लॉकडाउन में छत के ऊपर देखो नहीं आ रहे बन्दर।

तुम सुविज्ञ हो समझदार हो तुम पर हम सबकी आशा है।
लॉकडाउन को निभा रहे हो तुम इसके भी प्रत्याशा है।
कुछ दिन एकाकी रहने पर जब भी होगा मिलन प्रिय वर।
करो कल्पना कितने होगे प्रेम पगे वह क्षण अति सुन्दर।

आवश्यक है और अभी तुम लक्ष्मण रेखा मत लाँघों।
व्यर्थ जरूरत या इच्छाऐं चलो कि खूँटी पर टागों।
धीरे धीरे यह दुॅदिन भी मिट जायेंगे खो जायेंगे।
अभी उतावलापन मत करना बन्धन से मुक्ति पायेंगे।

-हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाईन, बिजनौर, उ०प्र०

कोरोना से मत घबड़ाओ।

अभूतपूर्व परिस्थिति भाई, हम सरकार के साथ हैं।
नहीं थामने हाथ किसी के, नहीं मिलाने गात हैं।।
मानव जाति की शामत आई।
कोरोना ने जगह बनाई।
मरना नहीं है, मिटना नहीं है,
अलग-अलग रह जीना भाई।
घर से बाहर नहीं निकलना, मोदी जी की बात हैं।
नहीं थामने हाथ किसी के, नहीं मिलाने गात हैं।।
रखो सफाई, दूरी बनाओ।
बातें करो, पर पास न आओ।
जिजीविशा जिंदा है जब तक,
कोरोना से मत घबड़ाओ।
घर में रह लो घर वाली संग, बच्चों संग सौगात है।
नहीं थामने हाथ किसी के, नहीं मिलाने गात हैं।।
दिल से दिल की बातें कर लें।
समय मिला परिवार की सुन लें।
अपने हाथ से खाना खिलाकर,
पत्नी के दिल की, धुन कुछ सुन लें।
कोरोना ने दिया है अवसर, खुद ही खुद के साथ हैं।
नहीं थामने हाथ किसी के, नहीं मिलाने गात हैं।।

-डॉ.संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी
जवाहर नवोदय विद्यालय, महेंद्रगंज, दक्षिण पश्चिम गारो पहाड़ियाँ, मेघालय-794106

गारो लोक कथा पर आधारित

ईमानदार सूअर और धोखेबाज कुत्ता

एक समय की बात है एक गाँव में एक वृद्ध दम्पति रहते थे. उनकी कोई संतान नहीं थी परन्तु वे भाग्यशाली थे कि उनके पास दो वफादार पालतू जानवर-सूअर और कुत्ता थे, जो उनके साथ हमेशा रहते थे. वे संतानहीन दम्पति उन्हें अपने बच्चों के समान रखते थे. दोनों पालतू जानवर भी उन्हें बहुत प्यार करते थे और उनके साथ-साथ खेती करने में उनकी मदद करते थे. एक बार वृद्ध व्यक्ति बीमार हो गया और वह खेत में नहीं जा सकता था अतः उसने दोनों को बुलाया और कहा-

'मेरे प्यारे बच्चों! देखो आज मैं बीमार हूँ इसलिए मैं खेत में काम करने नहीं जा सकूँगा लेकिन खेत जोतना जरूरी है. तुम दोनों जाओ और जितना जोत सकते हो खेत जोत लो. शाम को मैं आऊँगा और देखूँगा कि तुम लोगो में से किसने-कितना काम किया है? जिसका अच्छा काम होगा उसे पुरस्कार मिलेगा. पुरस्कार के रूप में उसे पका हुआ खाना मिलेगा और वह घर के अन्दर रह सकता है. अगर मुझे लगा कि किसी ने ठीक से काम नहीं किया है तो उस खाने के लिए नहीं मिलेगा और वह घर के बाहर रहेगा. यह तुम्हारी मेहनत और वफादारी की परीक्षा होगी.'

दोनों पालतू मालिक के कहे अनुसार खेत की ओर चल पड़े. दोनों ने ईमानदारी से काम शुरू कर दिया. उस दिन बहुत गर्मी और उमस थी इसलिए वे जल्दी थक गए. कुत्ता गर्मी नहीं सह पाया, वह थोड़ी देर के लिए पेड़ की छाया में लेट गया और खर्राटे भरने लगा. उस समय असहनीय गर्मी में भी सूअर अपने काम कर रहा था जबकि आराम से सो रहा था. मेहनती सूअर गर्मी में बिना आराम किये अपना काम कर रहा था लेकिन कुत्ता खर्राटे पर खर्राटा भर रहा था. उसे पेड़ के नीचे ठंडक और आराम मिल रहा था. देर दोपहर को अचानक कुत्ते को वह बात याद आई, जो उसके मालिक ने सुबह कहा था. सूअर को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि कुत्ता सोना छोड़कर पागलों की तरह भौंकने लगा और खेत के चारो ओर दौड़ने लगा. जोते गए खेत के चारो ओर दौड़ने के कारण पूरे खेत में उसके पैरों के निशान बन गए थे. सूअर अपने दोस्त की बात से अनजान आश्चर्य से उसे देख रहा था.

शाम को उनका मालिक काम देखने आया. वह अपने पालतू पशुओं का काम देखकर बहुत खुश हुआ. उसके पालतुओं ने अपना काम पूरी जिम्मेदारी किया था. उसने उनके काम की प्रशंसा की और पूछा कि क्या दोनों ने कठिन परिश्रम किया है? उस समय सूअर ने शिकायत की कि कुत्ता पेड़ की छाया में आराम से सो रहा था. चालाक कुत्ते ने तुरंत जबाव दिया कि सूअर झूठ बोल रहा है. उसने कहा-यह एक बहुत बड़ा झूठ है. यह आराम कर रहा था जबकि मैं कड़ी मेहनत कर रहा था.

इसके बाद दोनों आपस में लड़ने लगे. दोनों यह दावा किया कि उन्होंने कड़ी मेहनत की है. वे एक-दूसरे पर आरोप

&Mk- vuhrk iMk

लगाने लगे कि एक सो रहा था और दूसरा काम कर रहा था. दोनों अपने मालिक का स्वादिष्ट भोजन करना चाहते थे. मालिक असमंजस में पड़ गया. उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? उसकी यह समझ में नहीं आया कि जो अभी तक मिलजुल कर रहते थे और उनके बीच कोई मनमुटाव नहीं था अचानक उनमें इतना परिवर्तन कैसे आ गया? वे दोनों वफादार थे और वह दोनों से प्यार करता था. उसने कभी नहीं सोचा था कि वे एक-दूसरे को धोखा भी दे सकते हैं. उसे दुविधा में देखकर चालाक कुत्ते ने कहा-आप खेत में जाकर देंखे कि वहाँ किसके पैरों के निशान हैं? इस पर मेहनती सूअर चिल्लाया-अरे! यह सरासर अन्याय है. मैंने कड़ी मेहनत करके खेत जोता जिसे कुत्ते ने अंधाधुंध दौड़ते हुए बर्बाद कर दिया. सूअर की बात सुनकर मालिक और भी उलझन में पड़ गया क्योंकि वह दोनों से प्यार करता था और उन्हें ईनाम भी देना चाहता था

परन्तु यह पता करना भी जरूरी था कि कौन सच बोल रहा है?

उसे कुत्ते की सलाह ठीक लगी. वह खेत में गया और उसे वहाँ कुत्ते के पैरों के निशान ज्यादा दिखाई दिए. सूअर के लाख समझाने के बाद भी उसने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि उसे इस बात का प्रमाण मिल गया था. उसने अपने किए गए वादे के अनुसार कुत्ते को पकाया हुआ खाना और घर के अन्दर रहने दिया जबकि सूअर को घर के बाहर अच्छी-सी जगह दी लेकिन उसे घर के अन्दर आने की अनुमति नहीं मिली.

चालाक कुत्ते ने यद्यपि कुछ भी नहीं किया, धोखे से पुरस्कार प्राप्त किया परन्तु उसका मूल्य मेहनती सूअर ने चुकाया. अगर हम ध्यान से देखें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि किसने मेहनत की और कौन आलसी था? कौन असली है और कौन धोखेबाज?

अपने साथ बिना कारण हुए अन्याय से सूअर कुत्ते को कभी क्षमा नहीं कर सका और कुत्ते तथा सूअर में कभी मित्रता नहीं हो सकी. वे एक-दूसरे के शत्रु बन गए. देखा गया है कि अक्सर आसपास रहने वाले बेईमान व्यक्ति ईमानदार लोगों का फायदा उठाते हैं इसलिए सलाह है कि हमें उनसे सावधान रहना चाहिए.

आधार ग्रंथः मायरेड कलर्स ऑफ नार्थ इस्ट बुक-1, लेखिका-सी.टी. संगमा, अनुवादिकाः डॉ० अनीता पंडा, श्री बी.के.पंडा, अरबन अफेयर्स रेसिडेन्सियल काम्पलेक्स, 97, खर मालकी शिलांग, मेघालय

कहानी

मैं गुनहगार हूँ

-हितेश कुमार शर्मा
बिजनौर, उत्तर प्रदेश

पुलिस के सिपाही गश्त पर थे दंगाईयों ने सभी घर जला दिये थे दुकाने पफूंक दी थी स्कूल में आग लगा दी गयी थी. बहुत से लोग लापता थे और बहुत से लाशों में तबदील हो गये थे. गश्त करते करते जब पुलिस की टुकड़ी कब्रिस्तान के पास पँहुची तो बड़े जोर से रोने की आवाज आ रही थी. पुलिस कप्तान ठिठक गये और सिपाहीयों से कहा देखों सामने वाले मकान से रोने की आवाज आ रही है पूछों क्या बात है.

सिपाही उस मकान के पास गया जहाँ से रोने की आवाज आ रही थी. सिपाही ने दरवाजा खटखटा कर पूछा अन्दर कौन है और क्यों रो रहे हो? रोने की आवाज एकदम से बन्द हो गयी. जैसे कोई डर गया हो.

सिपाही ने फिर आवाज दी डरो मत हम पुलिस है दरवाजा खोलो और बताओं क्या परेशानी है?

दरवाजा खुला उसमें से एक आदमी और उसके पीछे एक महिला दरवाजे पर आकर खड़े हो गये.

सिपाही ने पूछा क्यों रो रहे हो?

आदमी बोला क्या बताये दो दिन से खाने को कुछ नहीं है दोनों बच्चे भूख से तड़प रहे है शहर में कर्फ्यू लगा है. बाहर जाने में खतरा है, बच्चे तड़प रहे है और हम कुछ कर नहीं पा रहे. सिपाही ने कहा यह जो तुम्हारे आस पास की दुकाने जली है क्या इनमें कोई खाने का सामान बेचने की दुकान नहीं थी.

वह आदमी बोला थी लेकिन जला दी गयी.

सिपाही ने पूछा तुमने दुकान को बचाया क्यों नहीं?

आदमी बोला क्या बताये दो दिन से खाने को कुछ नहीं है दोनों बच्चे भूख से तड़प रहे है शहर में कर्फ्यू लगा है. बाहर जाने में खतरा है, बच्चे तड़प रहे है और हम कुछ कर नहीं पा रहे. सिपाही ने कहा यह जो तुम्हारे आस पास की दुकाने जली है क्या इनमें कोई खाने का सामान बेचने की दुकान नहीं थी.

इससे पहले कि वह आदमी कुछ बोलता उसकी औरत बोली जलाने वालो में यह खुद शामिल थे यह बचाते कैसे. अब खुदा उसी की सजा हमें दे रहा है, कि बच्चे हमारे सामने भूख से तड़प रहे है और हम उन्हें खाने को कुछ नहीं दे सकते.

पुलिस के साथ जो कप्तान था उसके दिल में दया आयी और उसने एक बिस्कुट का पैकेट उनको देकर कहा जाओं बच्चों को दे दो. शायद कल सुबह तक कर्फ्यू खुल जाये. तब खाने का जुगाड़ करना.

पुलिस की टुकड़ी आगे बढ़ गयी. दस पन्द्रह मकान छोड़कर एक मकान के सामने जब पहुँचे तो वहाँ से भी रोने की आवाज आ रही थी.

पुलिस कप्तान ने वहाँ भी जानकारी करने को कहा तो पता चला कि वहाँ किसी औरत को बच्चा होने वाला है और कोई डाक्टरी सहायता उपलब्ध नहीं है.

पुलिस कप्तान ने कहा यहाँ पास में कोई अस्पताल नहीं या कोई डाक्टर नहीं रहता. तो उस मकान के अन्दर से एक बच्चा आया उसने कहा पास में ही डाक्टर अंकल का मकान था जिसको हमारे अब्बा ने आग के हवाले कर दिया.

पुलिस कप्तान ने कहा तुम्हारे अब्बा कहाँ है?

बच्चे ने कहा वह घर पर नहीं है कल से कहीं बाहर चले गये है. अम्मी रो रही है मैं क्या करूँ?

पुलिस कप्तान ने कहा रो मत हम तलाश करते है कोई डॉक्टर या अस्पताल खुला मिला तो तुम्हारी अम्मी को वहाँ ले जायेंगे.

पुलिस टुकड़ी आगे बढ़ गयी. कुछ दूर पर एक आदमी कुर्सी पर गुमसुम बैठा हुआ था.

पुलिस कप्तान ने उससे पूछा यहाँ क्यों बैठे हो तुम्हें पता नहीं कर्फ्यू लगा है.

वह आदमी बोला अब कर्फ्यू मेरा क्या करेंगा मेरा क्लिनिक दंगाईयों ने फूंक दिया. मेरी डॉक्टर बीबी कल से गायब है. कहाँ गयी किस हाल में होगी पता नहीं. घर खड़ा हुआ है खाली है सारा सामान दंगाई लूट कर ले गये. आप भी मुझे ले चलो और बन्द कर दो.

पुलिस कप्तान ने कहा हिम्मत रखो यह हालात हमेशा नहीं रहेगे. धीरे-धीरे सामान्य हो जायेगे. तुम जाकर घर के अन्दर जो कुछ है उसको सम्भालो तुम्हारी पत्नी की फोटो हो तो मुझे दे दो. पता लगाने का प्रयास किया जायेगा कि वह कहाँ गयी?

वह व्यक्ति बोला फोटो थी अब शीशे के बिखरे टुकड़े, टूटा फ्रेम और राख बची है क्या दूँ.

पुलिस कप्तान ने कहा हौंसला रखो सब ठीक हो जायेगा.

पुलिस टुकड़ी आगे बढ़ गयी. 25, 30 जली हुई दुकानों के बाद कुछ कारे जली हुई खड़ी थी. उनसे आगे बढ़ने पर एक मंदिर था जिसके बाहर एक महिला बैठी थी. पुलिस कप्तान ने पूछा कौन हो कहाँ से आई हो घर कहाँ है और यहाँ क्यों बैठी हो?

इतने सारे सवालों का जबाव क्या दूँ. परसो जब दंगाई हमारे क्लिनिक को जला रहे थे और घर पर हमला करने वाले थे तो मेरे पति ने कहा तुम भाग जाओ, और कहीं छिप जाना. मैं कुछ बचाने की कौशिश करूँगा. अगर बच गया तो फिर मिलेगे. मैंने पति से बहुत कहा कि मैं आपको छोड़कर नहीं जाऊँगी. लेकिन उन्होंने कसम दे दी. और मैं रात के अंधेरे में आकर इस मंदिर में छिप गयी. यह हिन्दुओं का मोहल्ला है यहाँ दंगाई आने की हिम्मत नहीं कर सके.

पुलिस कप्तान ने कहा आप डाक्टर है. महिला ने कहा-'हाँ.'

पुलिस कप्तान ने कहा आईये हमारे साथ आपको घर तक पहुँचा दे. लेकिन उससे पहले आपको एक महिला को देखना है जो शायद प्रसव पीड़ा से दुखी है.

पुलिस कप्तान उस महिला को लेकर पहले उसके घर गये. उसके पति से मिले और फिर उनसे कहा कि जरा आप हमारे साथ चलकर एक महिला को देख ले.

महिला के पति ने कुछ नानुकर की लेकिन महिला ने कहा देखने में कोई हर्ज नहीं है चलो देख लेते है.

पुलिस कप्तान उनको लेकर उस घर में पहुँचा जहाँ उस घर की महिला रो रही थी. चीख रही थी, चिल्ला रही थी.

पुलिस कप्तान ने अपने साथ आई डाक्टर महिला से कहा जरा अन्दर जाकर देख लो.

वह डाक्टर महिला अन्दर गयी. और वहाँ उसने देखा कि एक औरत तड़प रही है उसको बच्चा होने वाला है. पास में उसका छोटा बेटा बैठा रो रहा है. डॉक्टर महिला ने आकर कहा इस औरत को अस्पताल पहुँचाना पड़ेगा. वरना यह बचेगी नहीं.

पुलिस कप्तान ने फोन करके सरकारी गाड़ी मगाई और उसमें बैठाकर डॉक्टर महिला प्रसव पीड़िता महिला व उसके बच्चे को अस्पताल पहुँचाया.

पुलिस टुकड़ी आगे बढ़ गयी. आगे एक स्कूल था जो खण्डहर बन चुका था. जिसका सब फर्नीचर जल चुका था वह सामने दिखाई दिया. उसमें एक बच्चा खड़ा हुआ रो रहा था.

**पुलिस कप्तान ने कहा आप डाक्टर है. महिला ने कहा-'हाँ.'
पुलिस कप्तान ने कहा आईये हमारे साथ आपको घर तक पहुँचा दे. लेकिन उससे पहले आपको एक महिला को देखना है जो शायद प्रसव पीड़ा से दुखी है.**

पुलिस कप्तान ने पूछा क्यों रो रहे हो? बच्चा बोला यह मेरा स्कूल है इसमें आग लगा दी. मैं अब कहाँ पढ़ूँगा.
पुलिस कप्तान ने पूछा इसमें आग किसने लगाई?
बच्चा बोला मैं क्यों बताऊँ कि इसमें आग मेरे चाचा ने, मेरे भाई ने और मेरे मामा ने लगाई है. उनके बच्चे भी इसमें पढ़ते थे अब क्या होगा. बगैर पढ़े लिखे-
बीच में ही पुलिस कप्तान ने कहा जिन्होंने आग लगाई थी वह तुम्हारे माता चाचा भाई कहाँ है?
बच्चे ने कहा मैं क्यों बताऊँ कि वह परसो रात से घर से भागे हुए है. और अब तो मैं भी अपनी माँ के साथ कचहरी जाऊँगा. और वहाँ वकील चाचा से पता लगाने को कहूँगा.
पुलिस कप्तान ने कहा कि अगर तुम्हें तुम्हारे चाचा मामा भाई मिले तो हमारे पास भेज देना.
बच्चे ने कहा मैं क्यों भेजू आप खुद ही ढूंढ लो. और उनसे कहना कि मैं उन्हें याद कर रहा हूँ.
पुलिस कप्तान ने कहा बेटे तुम्हारा नाम क्या है?
बच्चा बोला मैं क्यों बताऊँ कि मेरा नाम असलम है?
पुलिस कप्तान हंसते हुए आगे चल दिये.
बच्चे ने कहा आगे कहाँ जा रहे हो? पुलिस कप्तान ने कहा मैं क्यों बताऊँ कि हम कहाँ जा रहे है तुम अपने आप पता कर लेना.
कहानी खत्म नहीं हुई कहानी शुरू हुई है और अगर दंगाई नहीं सुधरे और दोनों तरफ से अल्ला हूँ अकबर तथा हर हर महादेव के नारे लगते रहे, तो कहानियाँ बनती रहेगी. निशानियाँ मिटती रहेगी, आग जलती रहेगी, और सियासत अपनी रोटियाँ सेकती रहेगी.

श्री सीताराम गुप्ता की लघु कथाएं

लोकतंत्र

झुंड के झुंड लोग गाँव के स्कूल की ओर जा रहे थे. एक बच्चे ने माँ से पूछा कि माँ ये सब लोग कहाँ जा रहे हैं? माँ ने बताया कि ये सब लोग वोट डालने जा रहे हैं. ''वोट डालने से क्या होगा माँ?'' बच्चे ने पूछा. माँ ने कहा कि वोट डालने से मुखिया का चुनाव होगा. जब बच्चे ने पूछा कि माँ हर बार इन्हीं को मुखिया चुनने के लिए वोट क्यों डालते हैं तो माँ ने कहा कि मुझे नहीं पता. कुछ देर के बाद बच्चे ने माँ से फिर पूछा, ''माँ ये जो हमारे गाँव के मुखिया हैं इनकी मौत के बाद गाँव का मुखिया कौन बनेगा?'' माँ ने कहा कि सीधी सी बात है कि मुखिया की मौत के बाद उसका बेटा मुखिया बनेगा. बच्चे ने इसके बाद फिर पूछा, ''मुखिया के बेटे की मौत के बाद फिर मुखिया कौन बनेगा?'' माँ ने तनिक झुंझलाते हुए कहा, ''अरे सभी जानते हैं उसकी मौत के बाद उसका बेटा मुखिया बनेगा। ''यदि उसकी भी मौत हो गई तो फिर मुखिया कौन बनेगा?'' बच्चे ने एक बार फिर जिज्ञासा व्यक्त की.

माँ ने इस बार बच्चे को थोड़ा समझाने के लहजे में कहा, ''उसके बाद कोई भी मुखिया बने पर एक बात ध्यान से सुन ले कि तेरा नंबर कहीं नहीं है।'' जब मुखिया का बेटा ही अगला मुखिया बनना है तो ये वोट क्यों डाले जाते हैं?'' बच्चे ने अगला सवाल दाग दिया. इस बार माँ चुप थी क्योंकि इस प्रश्न का कोई उत्तर सचमुच उसके पास नहीं था. पास ही खड़े एक समझदार व्यक्ति ने जो माँ-बेटे की बातचीत सुन रहा था बच्चे को अपने पास बुलाया और कहा, ''बच्चे हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है इसलिए हर मुखिया का चुनाव लोगों के वोटों द्वारा ही किया जाता है. महत्त्वपूर्ण ये नहीं कि कौन मुखिया बनता है बल्कि महत्त्वपूर्ण ये है कि मुखिया का चुनाव कैसे किया जाता है. यदि वोट नहीं डालेंगे तो प्रजातंत्र का अर्थ ही क्या रह जाएगा?'' बच्चे ने इतना ही कहा, ''अच्छा तो लोकतंत्र की रक्षा के लिए लोगों का वोट डालना बहुत ज़रूरी है।''

लूट-खसोट

टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिस्री बेचने वाले ने गली में प्रवेश किया और ज़ोर से आवाज़ लगाई, ''टूटे-फूटे पीतल-ताँबे से गोलागिरी बदलवा लो.'' कुछ ही देर में टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिस्री बदलवाने वालों की भीड़ सी लग गई. कुछ ख़रीददार थे तो कुछ तमाशबीन भी थे. कोई पीतल का टूटा चम्मच हाथ में लिए था तो कोई काँसे की फूटी कटोरी. किसी के हाथ में ताँबे का कोई टुकड़ा था तो किसी के हाथ में एल्युमीनियम का पिचका हुआ कोई बेपहचान सा बर्तन. थोड़ी ही देर में जब भीड़ छँट गई तो एक बारह-तेरह साल का लड़का सावधानी से इधर-उधर देखता हुआ पीतल का एक बड़ा सा लोटा लिए हुए आया और गोलागिरी बेचनेवाले से कहा, ''इसका गोला-मिस्री दे दे.'' लोटा पुराना या टूटा हुआ नहीं अपितु नया सा और मज़बूत लग रहा था.

स्थिति स्पष्ट थी फिर भी गोलागिरी बेचनेवाले ने पूछा, ''लोटा कहीं से चुराकर तो नहीं लाया है?'' ''नहीं, अपने घर से लाया हूँ. ये कोई काम नहीं आता इसलिए माँ ने कहा कि इसका गोला-मिस्री ले ले'', लड़के ने दृढ़तापूर्वक कहा. गोलागिरी बेचनेवाले ने नज़रें इधर-उधर घुमाईं और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाने के बाद कि कोई नहीं देख रहा है सावधानी से लड़के के हाथ से लोटा लेकर अपने अब तक आए हुए स्क्रैप के नीचे रख लिया और अंदाज़े से लड़के को थोड़ी सी गोलागिरी और मिस्री पकड़ा दी. जब लड़के ने कहा कि बस इतनी सी ही तो उसने और थोड़ी सी गोलागिरी और मिस्री लड़के को थमा दी. लड़का गोलागिरी और मिस्री लेकर शीघ्रता से जिधर से आया था उससे दूसरी तरफ निकल गया.

लोटे का सौदा निपटाकर गोलागिरी बेचने वाला जैसे ही आगे बढ़ा मैंने पीछे से आवाज़ लगाई, ''अरे ओ गोलागिरी बेचनेवाले! रुक ज़रा.'' गोलागिरी बेचने वाला रुक गया. मैंने उसके पास पहुँचकर उसे डाँटते हुए कहा, ''वो लोटा निकाल.'' उसने अनजान बनने की कोशिश करते हुए पूछा, ''कौन सा लोटा?'' मैंने कहा, ''वही लोटा जो अभी-अभी हमारा लड़का घर से चोरी से उठाके ला के तुझे दे गया है. तुझे शर्म नहीं आती बच्चों को चोरी करना सिखाते और उनसे चोरी का माल ख़रीदते? और बीस रुपए के नए लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री पकड़ा दिया!'' मैंने एक-एक रुपए के दो सिक्के उसकी छाबड़ी पर फेंकते हुए कहा, ''निकाल जल्दी से लोटा नहीं तो अभी बुलाता हूँ आसपास के लोगों को. तेरी वो ठुकाई करेंगे भूल जाएगा बच्चों से चोरी करवाना.'' गोलागिरी बेचने वाले ने लोटा निकालकर फ़ौरन मेरे हवाले कर दिया और उसने वहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही ग़नीमत समझी.

यह घटना मेरे साथ नहीं बल्कि नंदकिशोर के साथ घटित हुई थी. इस घटना को सुनाने के बाद नंदकिशोर ने कहा, ''वो तो मैं अपने घर की खिड़की के पास खड़ा हुआ सब देख रहा था कि तभी पड़ौस में रहने वाला एक लड़का लोटा लेकर आया और उसके बदले में जो भी गोला-मिस्री मिला लेकर चला गया. यदि मैं वहाँ नहीं होता तो गया था बीस रुपए का लोटा दो रुपए के गोला-मिस्री में. बीस रुपए के लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री. हद हो गई. दुनिया में बेईमानी की कोई सीमा नहीं रही. जहाँ देखो वहीं लूट-खसोट मची है.'' एक सज्जन ने नंदकिशोर से पूछा, ''जब पड़ौसी को लोटा वापस किया होगा तो वो तो बड़ा खुश हुआ होगा? उसने अपने लड़के की भी ठुकाई की होगी?'' ''लोटा पड़ौसी को क्यों देता? लोटे के बदले तो उसका लड़का गोला-मिस्री खा चुका था. मैंने तो अपनी अक़्ल लगाकर जेब से पैसे ख़र्च करके लोटा वापस लिया था गोलागिरी बेचनेवाले से'', नंदकिशोर ने अपनी अक़्ल की डींग मारते हुए बुलंद आवाज़ में कहा.

-ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

डॉ. शैल चन्द्रा की लघुकथाएं

विकलांग सोच

अपनी हार्डवेयर की दुकान पर मिस्टर गोयल बहुत दिनों के बाद आये थे. वे कई महीनों से बीमार चल रहे थे. बेटा ही दुकान संभाल रहा था.

आज दुकान का मुआयना वे बड़े ही सूक्ष्मता से कर रहे थे. तभी उन्होंने देखा कि एक युवक जिसका बांया हाथ कटा हुआ था. वह दुकान में काम कर रहा था. यह देखकर मिस्टर गोयल क्रोधित हो उठे और अपने बेटे पर नाराज होते हुए कहा, 'पीयूश, इस दिव्यांग लड़के को किसने काम पर रखा है?'

बेटे ने शांत स्वर से कहा, 'पापा इसका नाम संतोष है. इसे दुकान पर काम करने के लिए मैंने रखा है.'

'पर, यह तो दिव्यांग है. यह भला यहां क्या काम करेगा?' मिस्टर गोयल ने कहा.

मिस्टर गोयल की बातें सुन रहे उस युवक ने उत्तर में कहा, 'सर, क्या जो दिव्यांग होते हैं वे क्या कुछ काम नहीं कर सकते? हम तो बहुत कुछ करके दुनिया को दिखाना चाहते हैं परंतु आप जैसे समाज के लोगों की विकलांग सोच हमें और अधिक विकलांग और लाचार बनाने को तूल जाते हैं. आप जैसे लोग हमें केवल दया का पात्र बना कर छोड़ना चाहते हैं. सर, आप चिन्ता न करें मैं अपने एक हाथ से ही सारे कार्य कुशलता पूर्वक करके आपको दिखा दूंगा.'

यह कहते हुए उस युवक के चेहरे पर आत्मविश्वास झलकने लगा और युवक की बात सुनकर मिस्टर गोयल के चेहरे पर शर्मिन्दगी झलकने लगी.

संवेदनाएं बाकि हैं

लंबे अरसे से बीमार अम्मा जी आज सुबह चल बसीं. पड़ोस की कोई महिला कह रही थी-'चलो बहुत अच्छा हुआ. बेचारी को मुक्ति मिल गई. इस उम्र में अगर शरीर अशक्त हो जाये तो भुगतना ही तो है.'

उनकी बात सुन रही बहु ने कहा, 'आंटी जी, वे क्या भुगत रहीं थीं. हम सेवा करने वाले ही भुगत रहे थे. इनके चक्कर में हमने कितना पैसा बहाया है.'

पड़ोसन जानती थीं कि अम्मा जी की कैसी सेवा हो रही थी पर वह चुप रहीं.

तभी ननद ने कहा, भाभी, बाबूजी का पेंशन भी तो अम्मा को मिलता था. आप लोगों का पैसा थोड़े न गया. हां, अब अम्मा नहीं रही तो उनके सारे जेवर मुझे दे दीजियेगा क्यों कि माँ के जेवर पर बेटी का हक होता है. '

तभी बेटा जमीन का कागजात ढूंढ कर ले आया. जिसमें जमीन और मकान अम्मा के नाम की थी. वह परेशान सा बोला, 'क्या होता अगर अम्मा ने जीते जी यह जमीन मेरे नाम कर दी होती?'

तभी अम्मा की लाश पर पालतू कुत्ता मोती चक्कर लगाने लगा और अपनी मालकिन के पैरों के पास बैठकर आंसू बहाने लगा. इधर अम्मा का पालतू तोता भी तेज आवाज में अम्मा -अम्मा रटने लगा. जैसे कह रहा हो 'मेरी मालकिन को क्या हुआ है?'

ये पालतू पशु पक्षी सचमुच अम्मा के मरने पर अपना दुःख व्यक्त कर रहे थे.

कुत्ते को इस तरह रोते देखकर दास बाबू ने कहा, 'अरे, देखो, अम्मा जी के मरने पर यह कुत्ता कितना दुःखी है. इतना दुःख तो अम्मा के बेटे-बेटी को भी नहीं है. मनुष्यों से अच्छे तो ये पालतू जानवर हैं जिनमें अभी भी संवेदनाएं बाकी हैं.'

यह सुनकर वहाँ मौजूद लोगों ने मौन समर्थन किया.

डा. शैल चन्द्रा, रावण भाठा, नगरी
जिला-धमतरी, छत्तीसगढ़

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

i:jd i:l:x

पुरूषार्थ ही सफलता की शर्त है

अमेरिका के एक जंगल में एक नवयुवक दिन में लकड़िया काटता था. वह पढ़ना चाहता था, लेकिन गरीब था। नजदीक में कोई विद्यालय नहीं था. अन्ततः उसने अपने से ही पढ़ने का निश्चय किया. पुस्तकालय भी दस मील दूर था. उसने निश्चय किया कि वह पुस्तकालय से किताबें लाकर पढ़ेगा. वह अपने काम से छुट्टी पाकर दस मील दूर जाकर किताबें लाता, लकड़ी जलाकर पढ़ता और समय से पूर्व किताबें लौटा देता। पढ़ लिखकर अंततः वह वकील बना. उसने स्थानीय अदालत में वकालत शुरू की, लेकिन वकील के रूप में भी वह अपने को सही स्वरूप में नहीं रख पाता. उसके पास पैसे नहीं थे, कपड़ो को दुरूस्त कैसे रखे? उसके एक मित्र स्टैन्टन ने व्यंग्य कियाा **'तू वकील तो लगता ही नहीं, लगता है उज्जड़ देहाती, वकालत कैसे चलेगी? उसने कहा 'चले या न चले क्या करूँ. मैं केवल पोशाक में ही विश्वास नहीं करता. विश्वास है एक बात कि मैं झूठा मुकदमा नहीं लूंगा.'**

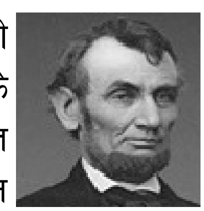

"मैं कौन हूँ?"

डॉ० अरुण कुमार आनन्द
चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

"परमात्मा की प्राप्ति क्यों नही होता?"
न तं विदाथ न इमां ज जान आनन्दयं युष्माकं अंतरं,
बभूर्व, प्रविष्ताः जलया चो सुतष्प उकथ्शासश चरन्ति।।

विनियार्थः मनुष्य उसे नही जानते-पहचानते शरीर दृष्ट होते हुए भी जिसने बनाया और संसार में जन्म देकर भेजा कि "कर्तव्य परायण बनो, और मेरा स्मरण करो" कितने आश्चर्य को युक्ति है, वह प्रत्येक जीव प्राणियों का मानवरूपी पिता हैं परन्तु स्वतः मानव उस परम पिता परमात्मा से शरीर दृश्य होते हुए भी जुदा है? तुम्हारा और उसके सानिध्य में क्यों अन्तर पड़ गया है? जब कि मनुष्य का प्रभू से अन्तर नही होना चाहिए? मनुष्य तो परमात्मा का आत्मा है, आत्मा में ही सदैव विश्वरण करता है, फिर उसके साथ यह गुण-गुणात्मक द्वंद क्यों? उससे तो अधिक निकटश्थ वस्तू तो कुछ भी नही है. हो भी नही सकता."

सत्वत्वः वह प्रत्येक मानव आत्मा में परमात्मा स्वरूप में विद्यमान है, और व्यापक निकट है, फिर भी हम उसे क्यों नही पहचानते और शिलामूर्ति में ढूंढते फिरते है? प्रत्येक जीवप्राणियों के अन्दर आत्मारूप में धड़कते उस परमपिता का दर्शन क्यों नही कर पाते? हम मनुष्यों से बड़ा मुर्ख और कौन होगा? यह स्मरण-चिंतन करो कि "मैं कौन हूँ? तो उस परमात्मा के साकार दर्शन होने लगेगा. फिर उसे मंदिरों मस्जिदों देवालयों में तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ेगी. फिर वह हमसे दूर क्यों होगा? रजो और तमोगुण ने उस परमात्मा और हमारे बीच पर्दा डाल दिया है, इसलिए पास होकर भी वह हमें दिखाई नही देता, लोभ-मोह क्रोध अहं ने हमारी मति भ्रष्ट कर रखी है इसलिए उस परमात्मा से बड़ा हमें धन, एवं धनोपार्जन दिखता है? यदि धन परमात्मा से बड़ा है, धनोबल से मृत्यु को क्यों नहीं रोका जा सकता? इसका मूल कारण क्या है, कि हमारे और परमात्मा के बीच प्राकषतिक दिवार खड़ी हो गई है। मनुष्य दो प्रकार के पर्दों से ढका हुआ है, इतना निकट होकर भी उससे इतना दूर होता जा रहा है. और यह पर्दा है अस्तिकत्व का ढोंग और पाखण्ड है. मनुष्य सोचता है कि मंदिर के मूर्ति के आगे सवा रूपया का प्रसाद चढ़ा कर सवा करोड़ मांगने की प्रवृत्ति-

मन्नते मांगने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायगी, किंतू वह भूल रहा है कि उसने परमात्मा को कुछ नही दिया, उसके बैंक में कुछ जमा नही किया, जीवप्राणियों से घृणा किया तो वह कहां से सवा करोड़ देगा? उसके पास कोई टकशाल नही लगा है? जो जितना उसे देगा उतना ही उस परमात्मा से भी पायगा. इसी युक्ति को अध्यात्म में दानपुण्य और परमार्थ कहा गया है. परमात्मा तो भाव का भूखा है चढ़ावा प्रसाद का भूखा नही है, दया और करूणा का प्यासा है, तर्पण-अर्पण का प्यासा नही हैं जीव प्राणियों पर दया और उसकी सेवा ही परमात्मा की प्राप्ति का सरल और सुगम मार्ग है. मनुष्य चाहे कितना ही अध्यात्मिक ढोंग एवं पाखण्ड क्यों न रच ले वह परमात्मा पर आशक्त आस्तिक नही हो सकता, फिर वह सुखी और सपन्न कैसे होगा? परमात्मा की प्राप्ति के लिए परमात्मा के प्रति आशक्त होना आवश्यक है. इसके लिए किसी मंदिर मस्जिद देवालयों में जाकर पाखण्ड करने की आवश्यकता नही है, न पिताम्बर भगवा वेष धारण करने की जरूरत है? सिर्फ रजो एवं तमोगुणों का परित्याग करने की आवश्यकता है. ऐसे ही महान व्यकितत्व थे संत कबीर दास, प्रत्येक मानव को संत कबीर दास के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए.

तमोगुण बाहुल मनुष्य नीहार (अज्ञान्ता) से ढके हुए होते है, जिसकी धुंध में इतने पास होते हुए भी परमात्मा को देख नही पाते, दर्शन नही करपाते, दूसरे रजोगुण बाहुल लोग जल्पिविद्या के शब्दा-अंडम्बर से अभिभूत मुर्खता से निर्थक कल्पना के पर्दे से अपने आप को ढके रहते यह दोनो प्रकार के मनुष्य नास्तिकता के मार्ग में इतनी दूर तक बढ़ते जा रहे है, प्रभू से दूर होते जा रहे है, अर्थात प्रभू से दूर हो गए हैं, उनको वापस मनुष्य जून में लौटना संभव ही नही है. नीहारवृत वे मृत्युलोक में असुतृप्त होकर विभिन्न यनियों में विचरण कर रहे है, खाते-पीते मौज करते निरंतर अपने जीवन के रक्षार्थ ही सक्रीय है. इच्छाओं-कामनाओं के संपूर्ति हेतू जगत में अपने प्राणों में ही, ज्यो-त्यों अपनी बढ़ती हुई अनगिनत अभिलाशाओं लोभ मोह को तृप्त कर पुष्ट करते जाते है, त्यो परमपित परमाप्मा से दूर होते जाते है मृत्युपर्यान्त नरक भोगते है. इसी प्रकार दूसरे अल्प जल्पावृत मनुष्य उकथ्शासु होकर

संसार में वृहद शास्थार्त कर विवाद-विताड़ में चतुर दूसरो को भी पाखण्ड की ओर प्रेरित करते हैं.

व्याख्यान देते फिरते हैं से परमेश्वर की प्राप्ति संभव नही है. किंतु परन्तु स्वत अपने आप को नही पहचानते, क्यों? ऐसी मनोवृत्ति, जितने प्रसिद्ध संत-महात्माः कथा प्रवक्त लेखक और शास्त्रार्थ कर्ता है, उतने ही यह संसारिक बाहम जाल में ऐसे उलझ जाते हैं जैसे बहेलिया के जाल में पक्षी उलझता है, अन्दर से निष्कष्ट अयोग्य होते जाते हैं. अतः अपने अन्दर आत्मस्थ परमात्मा से दूर होते जाते है, उन्हें ज्ञान ही नही होता कि 'मैं कौन हूँ?'

इसलिए प्रत्येक मनुष्यों को बाहरी दिखावट के अपेक्षा अपने अन्दर के आत्मा की तरफ लौटना चाहिए! और अपने आत्मा में उस परमात्मारूपी परमेश्वर को प्रात्त करने का प्रयास करना चाहिए अपष्तु प्राप्त कर लेना चाहिए. जिससे साथ हमें निरतर जुड़े रहना है.

शब्दार्थः ''हे मानव त नं विदाय' त्र तुम उस प्रभू को नही जानते, किंतु वह तुम्हें जन्म जन्मान्तर से जानता है'' जिसने कि इन सब पंचतत्व को बनाया, पालन-पोषण किया है, अत्यन्त ही अनन्त है, किंतु तुम अन्य प्रकार के हो गये त्र कुष्माक-भुष्माकं अन्तर 'वभूमं त्र वं च मानवं निहारेण त्र अज्ञान के कोहरे से आछंदित्त प्रवृिताः ढके हुए जल्पा च त्र अनृत' निरर्थक शब्द से ढके पलास की तरह, मनु त्र असुतृपः त्र प्राप्त तृप्ति में संलिप्त उककशारूः त्र आडम्बर युक्त वहुभावी होकर, मृत्युलोग में चर्न्ति भटकते रहते है।''

स्वास्थ्य

नेत्रहिनो के लिए अदभूत वरदान

''गमोतरी नेत्रप्रभा''

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द

सीतारोड, चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

इस गमोतरी वनौषधि का वर्णन 'आयूर्वेद भास्कर' ग्रंथ के पृष्ठ 236, पर 'ज्योतिस्यति बूटी' के रूप में मिलता है, कितु आज तक कोई भी वैद्य-हकीम, जड़ी बूटी खोजकर्ता विशेषज्ञ को गमोतरी की पहचान नही थी. ''आयुर्वेद जड़ी बूटी शोध एवं अनुसंधान संस्थान'' मेशज केन्द्र गोपेश्वर जि० चमोली उत्तराखण्ड, के सेवानिवृत शोध विशेषज्ञ 96 वर्षीय वैद्य श्री कुन्दन सिह रावत जी से मुलाकात के बाद उन्होंने ही हमें इस अदभूत चमत्कारिक वनौषधि की पहचान करवाया, जिस पर लगातार दो वर्ष शोध और अनुसंधान रोगियों पर प्रयोग के बाद परिणाम सामने आया, जो आश्चर्य जनक थे. औषधि तैयार करने की कुछ भावनात्तक प्रकष्याएं है, जिसको यहां पगट करना उचित नही, वैद्यक परंपरानुशार यह आवश्यक भी है.

गोमोतरी (नेत्रप्रभा) की लता बेल की तरह धरती पर लाजवंति की भांति घना फैला पौध होता है. यह बजरौरी रेतिले नमी वाले भूमि में नदी किनारे सुगमता पूर्वक पहाड़ी क्षेत्र में प्रचूर मात्रा में पाया जाता है. विशेष कर देहरादून से आगें सप्तधारा के आस-पास प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है. पत्ते छोटें चिरमिटा की भांति फूल नीले (धतूराफूल के आकार में) फल भूरें छोटे परवल आकर के लम्बे अन्दर गीले गोंद की तरह गाढ़ा पीला तरल पर्दाथ के बीच बेर की गुठली की भांति छोटे काले बीज होते है. यही गाढ़ा पीला गुढा गमोतरी है. जो सदा पानी में डालने से घुलता नही है. तुलसी अर्क गुलाब अर्क कपूर रस में डालने से घुलजाता है. धुलने के बाद रंग हल्का गुलाबी आभा युक्त सुनहरा हो जाता है. यही मोतियाबिंद जाला फूला का अदभूत चमत्कारिक औषधि है. इससे कैसा भी मोतियाबिंद, आंखो का कोनिर्या नष्ट हो गया हो, रोग साफ होकर दृष्टि वापस लौट आती है. पंचाग को कूट पीस कर भाष्यंत्र में डाल अर्क निकालें समभाग गुलाबजल शुद्व 1मि०ग्रा० कपूर 1मि०ग्रा० फिटकरी मिला आई० ड्रप्स तैयार करें. दो बूद डाल बकरी के कच्चे दूध में रूई का फाया भिगोकर पट्टी बांध दें. सुबह उठकर पट्टी खोलकर फिटकरी मिले गर्म जल से आंख धुलाई कर गुलाब जल की बूंदें डाल दें. दो तीन प्रक्रिया से ही मोतिया बिन्द बिना आपरेशन के साफ होकर समस्थ नेत्र विकार नष्ट हो जाते है. नेत्र ज्योति समान हो जाती है, चश्में उतर जाते, अन्तकाल तक आंखो का कोई रोग उत्पन्न नही होता.

गोमोतरी का पंचांग मुलायम नरई के साग की तरह स्वाद में हल्का खट्टा चटपटा-हल्का कडुवा होता है. स्थानीय निवासी इसकी साग भाजी बनाकर खाते हैं. इसलिए उन्हें अंतकाल तक आंखो के रोग मोतियाबिंद या दृष्टि दोष का रोग नही होत. नेत्र ज्योति अंतकाल तक बनी रहती है. जिन्हें आंखो की कोर्नियां (पुतली) ठीक है, फिर भी अंधे है, दृष्टि ज्योति नही है. गोमोतरी के जड़ का अर्क भाष्यंत्र से निकाल कर समभाग गुलाब जल मिला

आइ० ड्रप्त तैयार कर दो बूंद आंख में सोने से पहले डालें, सुबह गुलाब जल कपूर मिरण जल से नेत्र घोलें. 15 दिन के प्रयोग से नेत्र ज्योति प्रज्ज्वलित हो जायगी. जड़ को उबालने से पहले उसमें 10मि०ग्रा० फिटकरी (लाल रंग की) जरूर डाल दे. अदभूत चमत्कारिक आई० ड्राप्स बन जायगा, रंग गुलाबी आभा युक्त सुनहरा होगा. यदि रंग में फर्क हो तों प्रयोग नही करना चाहिए.

गोपनिय संकेतः आज भारत में दृष्टि दोष रोग से लगभग 95% लोग परेशान व दुःखी हैं. इन रोगों के द्वारा छिन जाने से मनुष्य दुःखी है, या जन्म जात दृष्टि हिनता से जीवन नीरस-हताश हो जाने को विवस है, जिससे वह निजात पाना चाहता है, का मेडिकल सांइस में उपचार को कोई उपाय नही है, के लिए गोमोतरी दिव्य दैविय वरदान बनकर सामने आया है, डा० कैम्लिहडसन (ब्रिटीस) ने इस सर्दभ में जो सर्वथा गोपनिय रहस्य जनकल्याणार्थ स्पष्ट किया है, वह वास्तव में आश्चर्य जनक है.

मनुष्य जीवन के दुःखदायी रोगों में मोतियाबिंद एक जटिल असाध्य समस्या है जिसकी वजह से रोगी बहुत दुःखी और जीवन से हताश निराश पेरशान, चिड़चिड़ा हो जाता है. नेत्रज्योति के बिना उसे जीवन बेअर्थ लगने लगता है, और आत्महत्या जैसे घातक कदम उठाने पर विवस हो जाता है. आज विश्व में 85% लोग अंधता के शिकार हो पीड़ित हैं कोनिर्या प्रतिरोपण के सिवाय इस समस्या का कोई और उपाय नही है. यह समस्या अधिकतर चालिस वर्ष की आयु के बाद उत्पन्न होती है और साठ वर्ष की अवस्था आते आते मनुष्य दृष्टि विहिन (अंधा) हो जाता हैं. कई बार आपरेशन के बाद भी समस्या समाप्त नही होती. ऐसे रोगियों के लिए 'गोमोतरी' वरदान से कम नही है.

मोतियाबिंद के लक्षण एवं अवस्थाः-

1) जब यह रोग प्रारम्भ होता है तो दृष्टि में धीरे-धीरें नियुन्ता आने लगती है, धूँधला दिखाई देने लगता है, बल्ब की रौशनी फैली हुई दिखाई पड़ने लगती है.

२) आंख में कोर्नियां (पुतली) के मध्य भाग में छोटा सफेद या काला बिंदु बनने लगता है. यह एक झिल्ली के पिंदे इकट्‌ठा होने वाला तरल पदार्थ है, जो आहिस्ते आहिस्ते बढ़ता जाता है, नेत्रज्योति को ढक देती है, को सफेद मोतियाबिंद या काला मोतिया बिंद कहते हैं.

3) रोगी को एक वस्तू की जगह दो वस्तू या धूँधला फैला साया दिखाई देना, दूर दिखाई देना बंद हो जाता है. मोतियाबिंद की पूर्ण अवस्था है. ऐसी अवस्था में चिड़चिड़ापन, झूझलाहट टेंशन और मानसिक परेशानी बढ़ जाती है. कभी-कभी यह समस्या दोनों आंखों में उत्पन्न होती ह. इस प्रकार की अवस्था कों "सेनाईल पोजिशन" कहा जाता है. आज का युग वैज्ञानिक युग है, लोगों का विश्वास ताजी जड़ी बूटियों पर बहूत ही कम है, लोग गोली अन्दर और रोग बाहर की स्थिति को सर्वत्र स्वीकारते हैं. कोर्निया के सफेद धब्बे को आपरेशन से झिल्ली उतारकर हटा दिया जाता है, उसकी जगह लैंस लगा दिया जाता है. इससे कुछ दिनो के लिए नजरे ठीक तो हो जाती है, लेकिन कमजोर हो जाती है. हमारे देश के साधू संन्यासियों ने ऐसी जड़ी बूटियों की पहचान खोज और प्रयोग किया है, जिससे असाध्य रोग भी समूल नष्ट हो जाता है.

गोमतरी के फल लाकर उसे छिलके सहित गुलाब जल की भावना देकर तब तक खरल करें जब तक वह एक जान न हो जाये, बाद गुलाब जल में भिक्षण कर आठ तै मलमूल कपड़े से छान लें, खरल करते वक्त 2 रत्ति लाल फिटकरी मिला लें. शीशी भरकर रख लें, रात्री सोते वक्त दो बूंद आंखो में डाल कर पट्‌टी बाँध दें, हवा नही लगना चाहिए सुबह उठकर पट्‌टी खोल फिटकरी युक्त गर्म जल से आंखे घोले रूई के फाहे सें, बाद गुलाब जल की बूद दिन में तीन चार बार डालें. धूल मिट्‌टी से बचाने के लिए रूई के फाहे से ढक कर पुन्हः पट्‌टी बांध दें. शाम पुनः यह प्रक्रिया दोहरायें. दो दिन बाद दवा बंद कर दे कितु गुलाब जल बरावर डालते रहे.

दो-तीन बार प्रयोग से ही मोतिया बिंद साफ हो जाता है. गमोतरी देहरादून के आसपास एवं रानीपोखरी ऋषिकेश के आस-पास सुशवा-सौग या बरसाती नदियों के बजरौटी भूमि में प्रचूर मात्रा में पाया जाता है. तासीर ठण्डा है. वस्तुत यह बूटी प्रकृति की तरफ से मानव को वरदान स्वरूप है.

गोमोतरी के अन्य लाभः स्थानिय लोग इसकी साग-भाजी बना कर खाते हैं इसलिए उनहे कभी दृष्टि दोष की शिकायत नही होती यह रक्तशोधक मल मूल शोधक कब्ज अजीर्ण रोग नही होता भूख बढ़ कर रक्त की बढ़ोतरी होती हैं, वल वीर्य शुकाणू वध ार्क लिकयूरिया मासिक धर्म की विकृतिया, रक्तचाप आदि नियत्रित होती है. गमोतरी अर्क मधुके के साथ प्रयोग करने से घातस्राव नपूष्कता स्वप्नदोष मस्तिक विकार नष्ट होते है. इसके मूल का अर्क बाजीकरण है. मत्रा अर्क १० मि० ग्रा० मधु से भोजनोपर्यान्त।

ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता का बहुत ही अभिनव कार्यक्रम है: डॉ० लीना मेंहदले

‘‘शिक्षा एवं साहित्य के इस संक्रमण काल जब साहित्य एवं शिक्षा जगत की समस्त गतिविधियां ठप्प पड़ गई है. ऐसे ऑन लाईन आयोजन करना वास्तव में स्तुत्य है. संस्थान द्वारा ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता का आयोजन वास्तव में सराहनीय एवं अनुकरणीय है. उक्त विचार विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा उत्तम तीन ऑन लाईन प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषणा के अवसर पर ऑन लाईन मुख्य अतिथि के रुप में शामिल हुए डॉ शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने कहीं.

आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि आयोजन के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण के बाद लाक डाउन 01 से 03 तक के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता के प्रतिभागियों का अलग से उत्तम-3 के चयन हेतु प्रतियोगिता हुई.

प्रश्नोत्तरी उत्तम तीन प्रतियोगिता एवं लाक डाउन 04 प्रश्नोत्तरी के परिणाम की घोषणा आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० शैलेन्द्र कुमार शर्मा, कुलानुशासक,

डॉ० शैलेन्द्र कुमार शर्मा, **मुख्य अतिथि**

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन म.प्र. ने की. जिसमें श्री पवन दूबे-उपनिरीक्षक, आईटीबीपी, नई दिल्ली को प्रथम, डॉ० नीलिमा दूबे-एसोसिएट प्रोफेसर, बंगलौर, कर्नाटक को द्वितीय तथा श्रीमती दीप्ति मिश्रा-उपकुलसचिव, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. एवं श्रीमती सपना गोस्वामी-प्रधानाचार्या, निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. को संयुक्त रुप से तृतीय स्थान मिला. लाक डाउन 4 प्रश्नोत्तरी में डॉ० राजश्री तिरविर-सहायक प्रोफेसर, बेलगाम-कर्नाटक को प्रथम, श्री शुभ द्विवेदी छात्र सरस्वती शिशु मंदिर (ज्वाला देवी), सिविल लाईन्स, प्रयागराज, उ.प्र. को

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख- अध्यक्षता

द्वितीय, श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी -सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, सोनभद्र, उ. प्र. को तृतीय एवं श्रीमती नाजो हातिकाकोति-शोमितपुर असम को चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ.

तालाबंदी 4 काव्य प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा विशिष्ट अतिथि डॉ. विजयालक्ष्मी रामटेके, अधिष्ठाता, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र ने की. जिसमें में श्रीमती अंजू अग्रवाल ‘लखनवी’ अजमेर, राजस्थान, श्रीमती इंदु बरैठ, कालचेस्टर, एक्सेस, ब्रिटेन, श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव-जांजगीर, चांपा, छ.ग. को प्राप्त हुआ.

उत्तम तीन काव्य प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख प्राचार्य, पूणे, महाराष्ट्र ने की. जिसमें श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव ‘शैली’-रायबरेली, उ.प्र. को प्रथम, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव ‘वान्या’ लखनऊ, उ.प्र. को द्वितीय, श्री नरेन्द्र भूषण-लखनऊ, उ.प्र. को तृतीय एवं डॉ०

निर्णायकः डॉ० के.आर.सत्तिगेरी, डॉ० लता अग्रवाल, डॉ० मनीषा शर्मा,

बायें से दाये डॉ० राजश्री तिरविर, श्री शुभ द्विवेदी, श्रीमती नाजो हातिकाकोति

बायें से दाये श्रीमती अंजू अग्रवाल, श्रीमती इंदु बरैठ, श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी

रेनू सिरोया 'कुमुदिनी' को चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ.

काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ० के.आर.सत्तिगेरी, पूर्व प्राचार्य, बी.डी. जत्ती बी.एड. कॉलेज, बेलगांव, कर्नाटक, डॉ० लता अग्रवाल, लघु कथाकार एवं कवयित्री, भोपाल, म.प्र. एवं डॉ० मनीषा शर्मा, एसो. प्रोफेसर, पत्रकारिता विभाग, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र. ने अपनी महत्ति भूमिका अदा की.

श्री द्विवेदी ने बताया कि लाक डाउन 4 प्रश्नोत्तरी में ब्रिटेन, श्रीलंका सहित भारत के 15 राज्यों के तथा काव्य प्रतियोगिता में ब्रिटेन सहित भारत के 6 राज्यों प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया. बहुत ही कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच प्रतियोगिता सम्पन्न हुई.

1996 ls =ekfld ,oa 2001 ls ekfld dk :i esa fujUrj izdkf'kr

dy] vkt vkj dy Hkh cgqi;kxh

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये,

पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन–1500/रुपये, संरक्षक: 11000/रुपये

[kkrk /kkjd– विश्व स्नेह समाज, cSad dk uke: विजया बैंक, [kkrk la[;k–718200300000104, vkbZ,Q,lLkh dksM–वीजेबी0007182 सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पता: एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेल:
vsnehsamaj@rediffmail.com

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1&20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान

2&20 l; 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री

3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि

4-**सभी आयु वर्ग के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री**

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथि: 15 fnlEcj 2020

lai dk;ky;%
सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
अनिल चक्की के सामने, लक्सों कंपनी के पहले, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड,
मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेल: sahityaseva@rediffmail.com,
hindiseva15@gmail.com, 9335155949

कोरोना लाक डाउन में अपने पड़ोसियों का ध्यान अवश्य रखें. अगर कोई हमारा पड़ोसी भूखे सोया तो हमारा मानव धर्म हमें धिक्कारेगा।

&विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जनहित में जारी

तृतीय लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;lchvkbZ,u 0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०ः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।